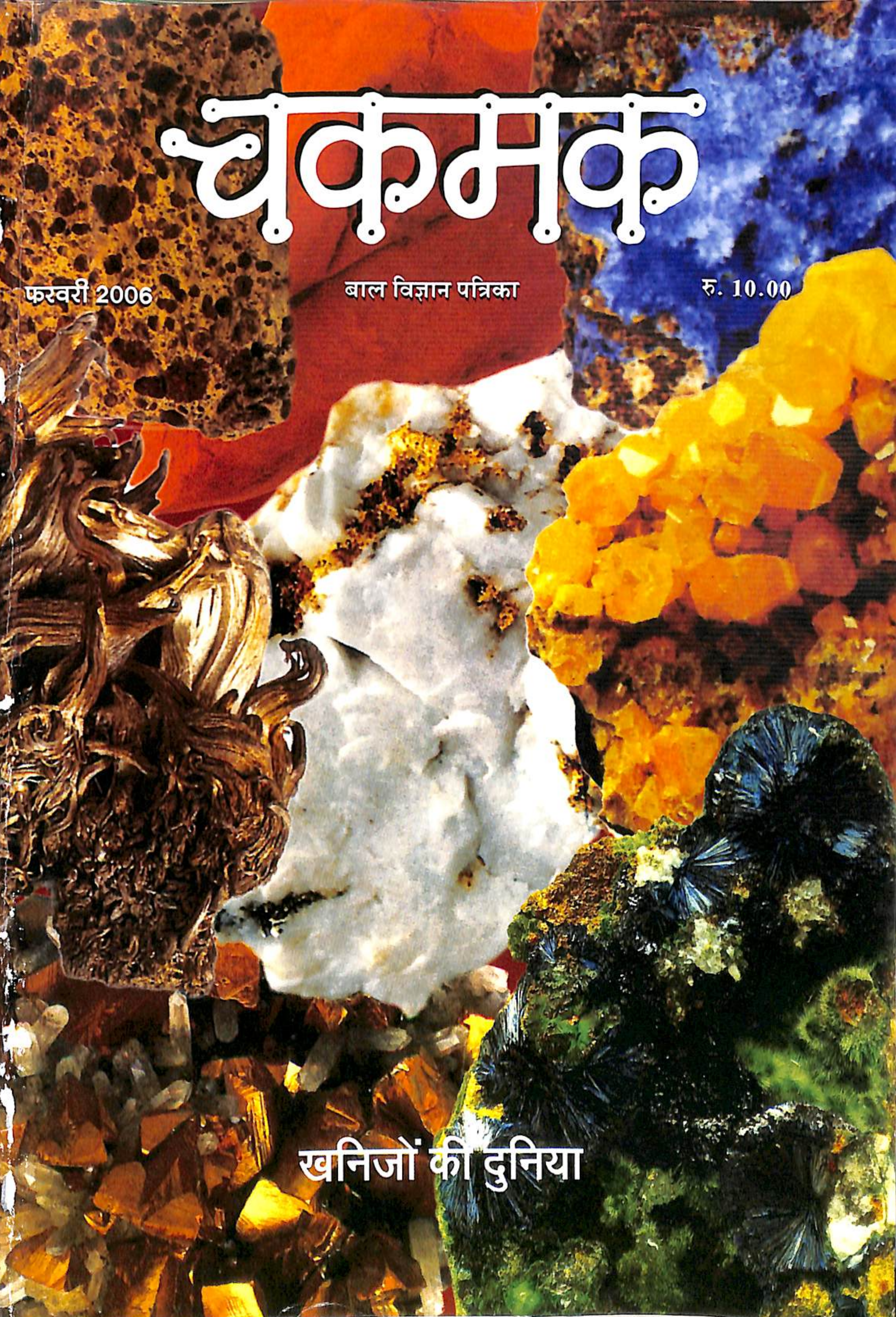
चकमक

फरवरी 2006

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00



खनिजों की दुनिया



दीपांकर, चार वर्ष, भोपाल, म.प्र.

अपनी बात...

दोस्तो,

आशा है तुमने सर्दियों के मौसम का भरपूर आनन्द लिया होगा। हर मौसम के अपने मज़े होते हैं। बरसात में उमड़-घुमड़कर घिरती घटाएँ और वर्षा की रिमझिम में ज़मीन से उठती सोंधी-सोंधी गंध।

गर्मियों में स्कूल की छुट्टियाँ, दोस्तों के साथ धमाचौकड़ी और इधर-उधर की यात्राएँ।

और सर्दियों में जी भर के खाना और दुनिया भर के खेलकूद। अधिकतर राष्ट्रीय - अंतर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिताएँ सर्दियों में ही होती हैं। और मुशायरे - कवि सम्मेलन, विद्यालयों के वार्षिकोत्सव, पुस्तक प्रदर्शनियाँ, स्नेह सम्मेलन, त्यौहार सब सर्दियों में ही होते हैं। और खाने-पीने के कितने ठाठ रहते हैं। मटर, गाजर, मूली, टमाटर, मेथी के पराठे, गाजर का हलुआ, मक्का की रोटी, सरसों का साग, बाजरे की खीच और खिचड़ा, गन्ने की राब, गरम-गरम जलेबी, मलाईदार दूध अहाहा।

कितनी सारी चीज़ें। गिनना शुरू करो तो मुँह में पानी आने लगे। और सबसे ऊपर गुड़! औरों की बात तो मैं नहीं जानता लेकिन मैं तो आज भी सर्दियों में खाना खाने के बाद थोड़ा-सा गुड़ ज़रूर खाता हूँ।

बहुत पहले **चकमक** में फिल्मों के बालगीत छापे गये थे। इसे पाठकों ने बहुत पसन्द किया था। बहुत सारे पाठकों की माँग थी कि यह स्तंभ दोबारा शुरू किया जाय। एकलव्य के वरिष्ठ साथी और **चकमक** के पूर्व सम्पादक राजेश उत्साही के सौजन्य से यह सिलसिला दोबारा शुरू कर रहे हैं। आशा है तुम्हें पसंद आएगा।

चकमक का अगला अंक हास्य-व्यंग्य विशेषांक होगा। जिनका चन्दा खत्म हो गया है वे शीघ्र सौ रुपए भेजकर वार्षिक ग्राहक बन जायें।

तुम्हारा

स्वयं प्रकाश

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 21, अंक-7, फरवरी 2006

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
स्वयं प्रकाश
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

सज्जा
राकेश खत्री

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे
मनोज निगम

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एचआईजी 453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)

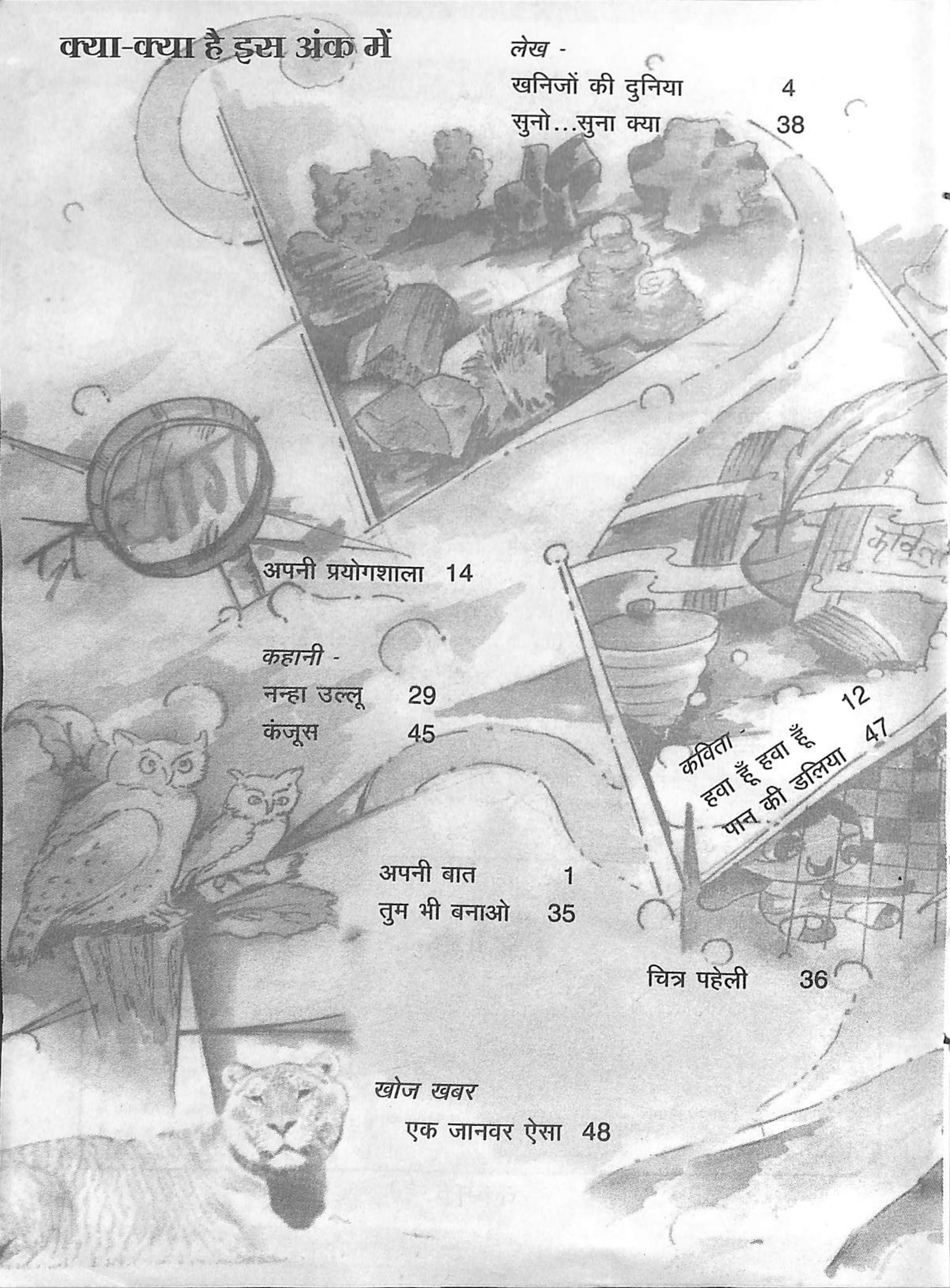
फोन - 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

चंदे की दरें

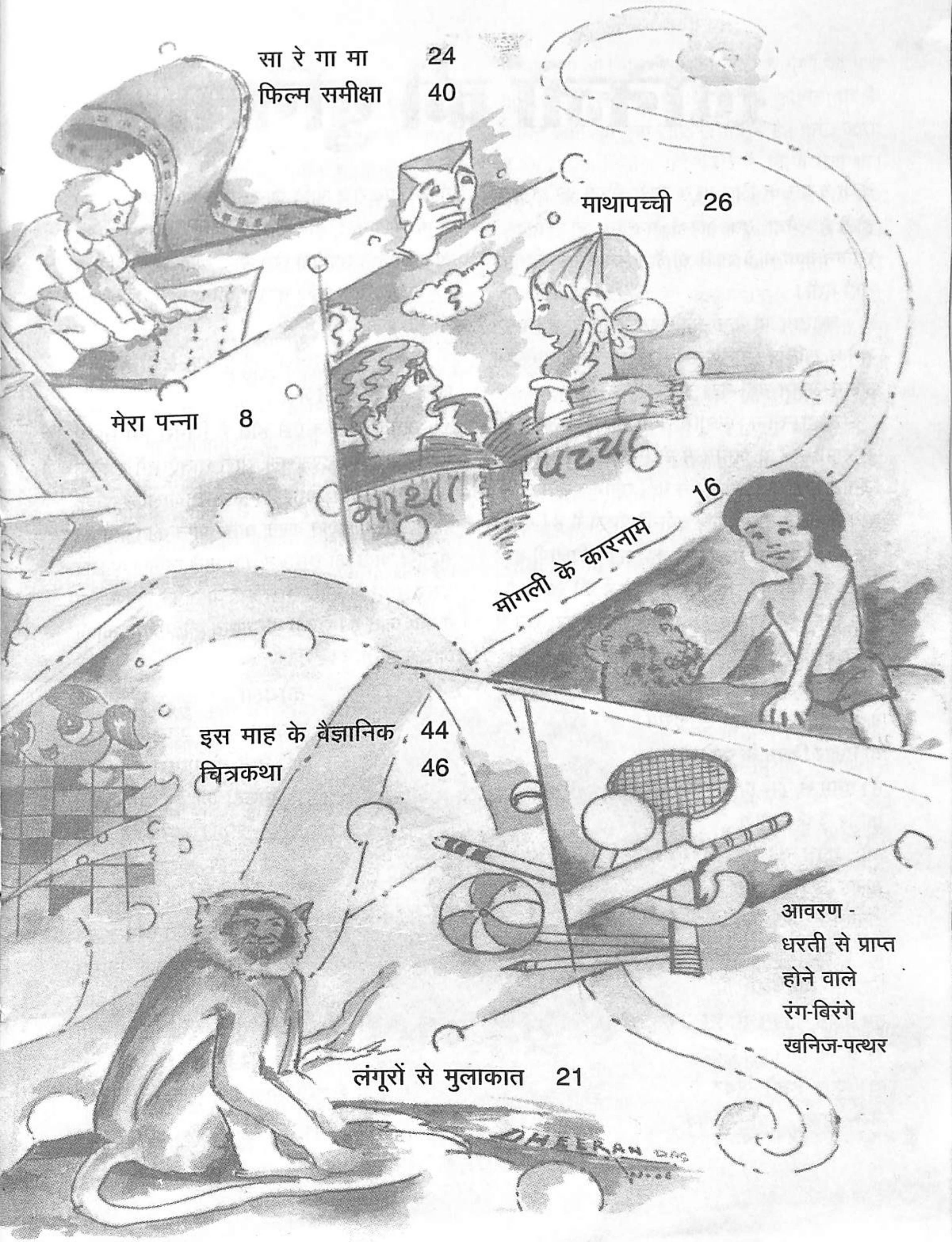
एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



क्या-क्या है इस अंक में



आवरण - धरती से प्राप्त होने वाले रंग-बिरंगे खनिज-पत्थर

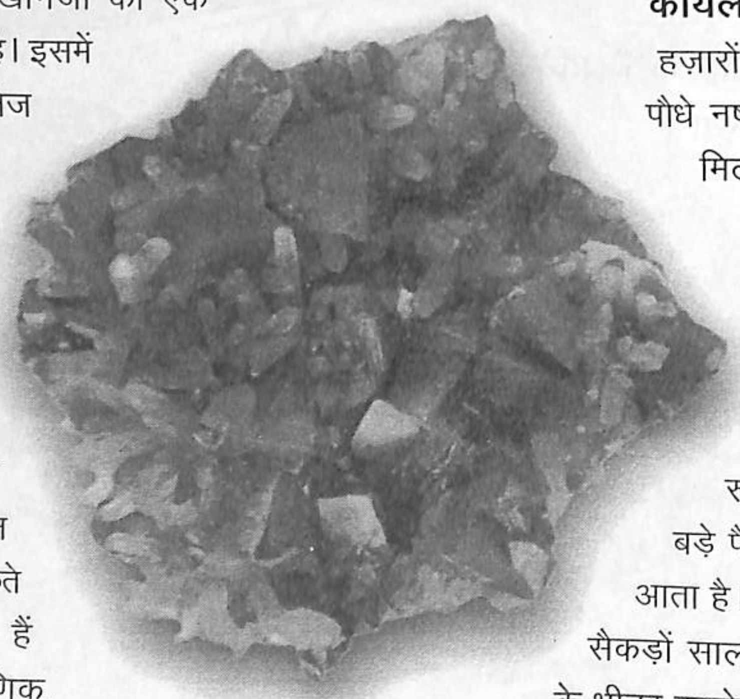
खनिजों की दुनिया

केक बनाने के लिए बहुत सारी चीज़ों की ज़रूरत होती है - मैदा, दूध, अण्डा, मक्खन, और शक्कर। लेकिन केक में ये सारी चीज़ें अलग-अलग दिखाई नहीं देतीं।

चट्टान भी केक की तरह ही होती है। इनमें अनेक खनिज (मिनरल्स) छिपे होते हैं जिन्हें हम अलग-अलग नहीं देख सकते।

लोहा, ताँबा, एल्यूमिनियम आदि धातुएँ कहाँ से आती हैं? ये ज़मीन में से निकलती हैं। लेकिन ज़मीन में ये धातु के रूप में नहीं, खनिज अयस्क के रूप में चट्टानों के बीच दबी-छिपी होती हैं। देखने पर कोई भी इन्हें पत्थर ही कहेगा। भूविज्ञानी इन्हें पहचान लेता है। तब इनकी खुदाई की जाती है। और एक लंबी प्रक्रिया के बाद यह हमें उस रूप में प्राप्त होती हैं जिस रूप में हमें दिखाई देती हैं।

धरती के गर्भ में खनिजों की एक बेहद रंग-बिरंगी दुनिया है। इसमें दो हज़ार किस्म के खनिज हैं। इनमें से कुछ इतने कठोर हैं जैसे-हीरा जो काँच को भी मलाई की तरह काट सकता है, और कुछ इतने नरम हैं जैसे-जिप्सम या टैल्क कि तुम अपने नाखून से उन पर अपना नाम लिख सकते हो। कुछ इतने सुंदर हैं जैसे- हीरा, पन्ना माणिक, नीलम, पुखराज आदि जो रत्न कहलाए और जिनसे मनुष्य ने मुकुट, हार, अँगूठी आदि आभूषण बनाए तो कुछ इतने उपयोगी जैसे लोहा ताँबा, अल्यूमीनियम कि आज उनके बगैर दुनिया की कल्पना कर पाना भी मुश्किल है।



ताँबे का अयस्क चेल्कोपाइराइट

आओ देखें खनिजों की दुनिया कैसी है-

धातु वाले खनिज

अनेक खनिज ऐसे होते हैं जिनसे हमें धातुएँ प्राप्त होती हैं। दरअसल सारी धातुएँ हमें खनिज रूप में ही प्राप्त होती हैं। उन्हें निकालकर साफ करके और परिष्कृत करके धातुएँ प्राप्त की जाती हैं। सोना व चाँदी को छोड़कर धातु वाले खनिज अक्सर दूसरे तत्वों के साथ मिले हुए या अपने लवण रूप में पाए जाते हैं। उनके परिशोधन की प्रक्रिया काफी जटिल होती है।

कोयला

हज़ारों बरस पहले जो पेड़-पौधे नष्ट हो गए उन पर रेत मिट्टी का ढेर जमा होता गया। समय के साथ ये कठोर चट्टानें बन गईं। और नष्ट वनस्पति कोयला बन गई। कोयला विभिन्न रूपों में पाया जाता है और बड़े पैमाने पर ईंधन के काम आता है। लेकिन इसको बनने में सैकड़ों साल लगते हैं। और धरती के भीतर इसके भण्डार सीमित ही हैं।

खनिज तेल

पेट्रोल, मिट्टी का तेल, डामर, पेट्रोलियम जैली और डीज़ल कहाँ से आता है? यह सब ज़मीन में से निकलता है। लेकिन ज़मीन के भीतर यह कहाँ से आता है? इस बारे में हम विस्तार से आगे कभी बताएँगे।

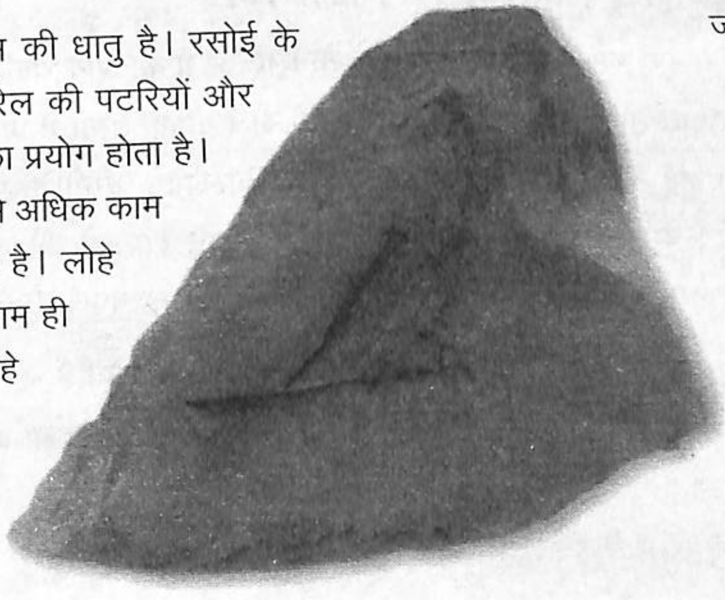
अन्य खनिज

कुछ खनिज ऐसे भी होते हैं जिन्हें हम खाते हैं जैसे नमक और कुछ खनिज ऐसे भी होते हैं जो ज़हरीले होते हैं जैसे पारा, जिसे तुमने थर्मामीटर में देखा होगा। कुछ खनिज जलने वाले होते हैं जैसे गंधक, जो ज्वालामुखी के लावे के साथ धरती की सतह पर आ जाता है। तो कुछ खनिज ऐसे होते हैं जो आग को बुझाते हैं जैसे एसबेस्टस। अपने इस गुण के कारण आग बुझाने वालों के कपड़ों और दस्तानों में एसबेस्टस का प्रयोग किया जाता है।

आओ अब कुछ धातुओं के खनिजों के बारे में विस्तार से बात करते हैं।

लोहा

लोहा बड़े काम की धातु है। रसोई के बर्तनों से लगाकर रेल की पटरियों और पुलों तक में लोहे का प्रयोग होता है। लोहा विश्व में सबसे अधिक काम में आने वाली धातु है। लोहे के बगैर तो कोई काम ही नहीं होता। चाहे हथियार बनाने हों चाहे औज़ार, चाहे मकान बनाना हो चाहे पुल, सूई बनानी हो या हल, लोहा तो चाहिए ही।



लोहे का अयस्क लिमोनाइट

लोहा लगभग पाँच हज़ार साल पहले खोज लिया गया था। भारतीयों को लोहे के गुणों का पता बहुत पहले लग गया था। दिल्ली में कुतुबमीनार के सामने लोहे की एक लाट लगी हुई है। कहा जाता है कि इसका निर्माण सन 415 में किया गया था। तब से अब तक धूप, हवा, आँधी पानी के बीच खड़ी इस लाट पर ज़रा सा भी ज़ंग नहीं लगा है।

लोहा ज़मीन में जिस रूप में पाया जाता है उसे लिमोनाइट, बाक्साइट, वोल्फ्रेमाइट आदि कहते हैं। ये गेरू के रंग के नरम पत्थर जैसा होता है। इसे भट्टी में पिघलाकर लोहा निकाला जाता है। लोहे का आरम्भिक रूप कच्चा लोहा होता है। इसे बीड़ कहते हैं जिससे बनी चीज़ गिरने पर टूट जाती है। इसमें दूसरे तत्व मिलाकर और इसे परिशुद्ध करके ढलवाँ लोहा, पिटवाँ लोहा और इस्पात बनाया जाता है।

ताँबा

ताँबे की खोज लोहे से बहुत पहले हो गई थी। उस ज़माने में बर्तनों से लेकर हथियारों तक अधिकाँश उपयोगी वस्तुएँ ताँबे से ही बनाई जाती थी। दरअसल पत्थर के बाद जिस पहली धातु का उपयोग मनुष्य ने सीखा वह ताँबा ही था। बाद में ताँबे में जस्ता मिलाकर काँसा बनाया गया और लंबे समय तक काँसे की चीज़ों का उपयोग होता रहा। ईसा से पाँच सौ साल पहले लोग काँसे की मूर्तियाँ बनाना सीख चुके थे।

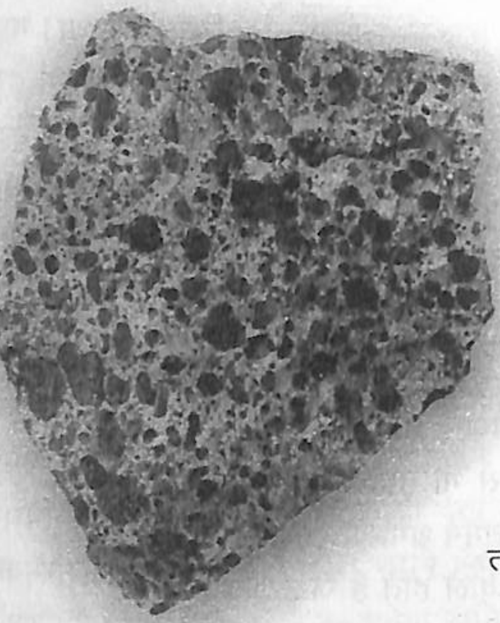
ताँबा विद्युत का बहुत अच्छा चालक होता है। किसी समय बिजली के तार ताँबे से ही बनाए जाते

थे। पीने का पानी भी ताँबे के बर्तनों में रखा जाता था।

ताँबे का मुख्य अयस्क (ज़मीन के भीतर मिलने वाला रूप) चैल्कोपाइराइट है। ताँबा एक बहुत उपयोगी धातु है। लेकिन धरती के भीतर ताँबे के भण्डार अब बहुत ही कम बचे हैं।

अल्यूमीनियम

क्या तुम जानते हो हवाई जहाज़ किस धातु के बने होते हैं? हवाई जहाज़ अल्यूमीनियम की मिश्र धातु के बने होते हैं। अल्यूमीनियम एक हल्की लेकिन मज़बूत चंदेरी धातु है जिस पर ज़ंग नहीं लगता। अपने इन्हीं गुणों के कारण वह आज की दुनिया में सबसे लोकप्रिय धातु है।



अल्यूमीनियम का अयस्क बॉक्साइट

अल्यूमीनियम का अयस्क भूरी सलेटी, कंकरीली मिट्टी जैसा होता है। इसे बाक्साइट कहते है।

अल्यूमीनियम को जादुई धातु कहा जाता है। क्योंकि यह बहुत नरम होने के बावजूद बहुत मज़बूत होती है। इसे पतले से पतले तार या पन्नी में ढाला जा सकता है। गोली, चॉकलेट, च्यूइंग गम की पन्नी भी अल्यूमीनियम से ही बनी होती है।

विभिन्न धातुओं के खनन और शुद्धिकरण की कहानी हम तुम्हें आगे के अंकों में विस्तार से सुनाएँगे। ●

भोजन में खनिज

हमारे शरीर को चलाए रखने और स्वस्थ रखने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यह ऊर्जा हमें भोजन से प्राप्त होती है। भोजन से प्राप्त होने वाले पोषक तत्वों में प्रोटीन, वसा और विटामिन्स के अलावा कई तरह के खनिज भी होते हैं जैसे केल्शियम, मेग्नीशियम, लोहा, जस्ता और आयोडीन आदि। हमारे शरीर को बहुत कम मात्रा में इन खनिजों की ज़रूरत होती है (लगभग 100 मिलिग्राम प्रतिदिन) लेकिन इनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

केल्शियम और फास्फोरस से हमारे दाँत और हड्डियाँ मज़बूत होते हैं तो लोहे से खून में हीमोग्लोबीन का स्तर ठीक बना रहता है। जब शरीर में इन खनिजों की मात्रा कम हो जाती है तो हमें तरह-तरह के रोग हो जाते हैं। इस कमी को चिकित्सक पहचान लेते हैं और दवा के रूप में यही खनिज हमें खिलाते हैं, जिससे हम रोगमुक्त हो जाते हैं।

संतुलित आहार में ये सभी खनिज उचित मात्रा में मौजूद रहते हैं। जो बच्चे नियमित रूप से दूध पीते हैं और सब्ज़ियाँ खाते हैं, वे खनिजों की कमी के कारण बीमार नहीं पड़ेंगे।

खनन के खतरे

जहाँ भी खान या खदान खोदी जाती है, आसपास के पूरे क्षेत्र का पानी ज़मीन की दरारों से रिसकर खदान में आ जाता है। खदान में काम करने के लिए रात-दिन पम्प चलाकर इस पानी को बाहर फेंका जाता है। बाहर फेंका गया यह पानी बहकर नदी-नालों में चला जाता है या धरती पर फैलकर सूख जाता है।



लेकिन इससे दूसरी बात यह होती है कि आसपास के क्षेत्र का जल स्तर नीचे चला जाता है, कुँए सूख जाते हैं और खेती पर बुरा प्रभाव पड़ता है। खदान के चारों तरफ के पेड़-पौधे और जंगल भी सूखने उजड़ने लगते हैं।

खान या खदान जब काम की चीज़ निकालने के बाद खाली छोड़ दी जाती है तो पानी की मार से उसकी दीवारें कमज़ोर हो जाती हैं और खान के धसकने से होने वाली दुर्घटना की संभावना बहुत बढ़ जाती है। हमारे देश में भी इस कारण कुछ भयानक दुर्घटनाएँ हो चुकी हैं।

इन दोनों जोखिमों से निपटने के लिए आजकल खनन में 'कट एण्ड फिल' (काटो और भरो) पद्धति को काम में लिया जाता है। इसका सार यह है कि जितना खाली करो, उतना भरते जाओ। इसके अंतर्गत जिस क्षेत्र से अयस्क निकाला जाता है उस क्षेत्र को पत्थर के चूरे में सीमेण्ट मिलाकर भर दिया जाता है। यह तरीका थोड़ा महँगा ज़रूर है लेकिन मनुष्य और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए ज़रुरी है।

फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016
मुद्रक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
ई-7-एच.आई.जी. 453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016

सम्पादक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है : रेक्स डी. रोज़ारियो
: भारतीय
एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016

मैं विनोद रायना यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

1 फरवरी, 2006

नक्शा

एक लड़का था। उसका नाम सोनू था। उसके घर में उसके मामा का लड़का सुनील आया। और वह बोला सोनू मुझे तुम्हारी शाला देखनी है। सोनू बोला मेरी तबीयत खराब है। आज मैं नहीं जा सकता। सुनील लेकिन जिद करने लगा तो सोनू ने कहा मैं अपनी शाला का नक्शा बना देता हूँ। तुम नक्शा को देखकर चले जाना।

उसका चित्र ऐसा था -



कथा एवं चित्र- आशिका जैन, तीसरी, मड़देवरा, म.प्र

आसमान छू लूँ

जी चाहता है आसमान छू लूँ
पर है ये कोई धुँआ
या है कोई सूखा समन्दर
है ओलों का कोई घर
या है बादलों का नगर
सोच-सोच कर बीती रात मेरी
इसी सोच में दिन भी गया निकल
रात को जब इसको देखा
ऐसा दिखा जैसे
ओढ़ लिया हो काला कम्बल
बुला लिया हो जैसे
अपने दोस्तों तारों को अपने घर
सुबह जब सूरज आता
फिर रंग बदलता आसमान
कभी होता नीला, सफेद
तो कभी फिर हो जाता काला आसमान

- रीतासिंह, देवास, म.प्र.

मैं एक बार कोलकाता गया। मुझे बंगाली भाषा नहीं आती थी। मेरे दोस्त को हिन्दी नहीं आती थी।

मैंने पूछा- तुम्हारे माँ-बाप कैसे हैं?

दोस्त बोला- मोजे में।

मैंने पूछा- भाई-बहन कैसे हैं?

दोस्त बोला- मोजे में।

उसने पूछा- तुम कैसे हो?

मैं बोला- जूते में।

- अनंत, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

एक दिन अतुल और रवीन्द्र होटल में गये और एक प्लेट फ्राई मछली लाने का ऑर्डर दिया। वेटर प्लेट में एक छोटा और एक बड़ा टुकड़ा रखकर लाया। तब रवीन्द्र बड़ा टुकड़ा उठाकर खाने लगा। तो अतुल बोला- तुझमें बिल्कुल सभ्यता नहीं है तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं छोटा टुकड़ा उठाता। रवीन्द्र बोला- तो अब शिकायत क्यों कर रहे हो तुम्हें छोटा टुकड़ा मिल गया।

- धानी, छठी, भोपाल, म.प्र.

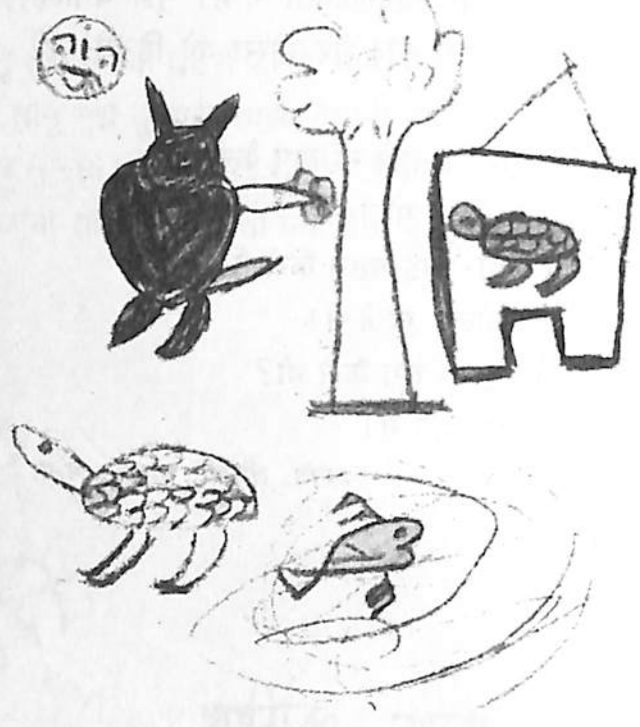


(नाम, पता नहीं लिखा)

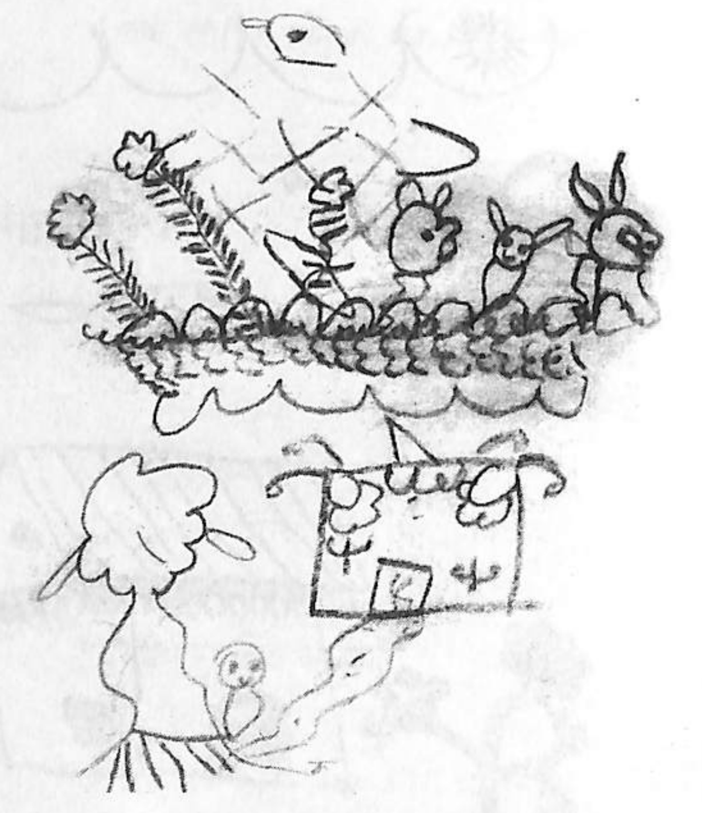
मामला पूँछ का

गोलू भोलू थे दो हाथी
दोनों थे बड़े पक्के साथी
एक दिन दोनों झगड़ पड़े
किसी बात पर अकड़ पड़े
इतने में एक चूहा आया
आपस में तुम क्यों लड़ते हो
दोनों को समझाया
बोला गोलू आज ज़रा एक बात फँसी है,
किसकी पूँछ हममें बड़ी है?
भोलू को भी आया ताव
उसने भी दे दिया सुझाव
तुम ही भैया करो नपाई
खत्म कराओ हमारी लड़ाई
चूहा भी सकते में आया
यह कहाँ किस्सा उलझाया
जिसकी पूँछ बड़ी बताई
वह तो देगा मुझे मिठाई
और जिसकी पूँछ बनाई छोटी
वह मारेगा मुझको सोटी
फिर चूहे ने दिमाग लगाया
दोनों को एक-सा बतलाया
यह सुनकर वे उछल पड़े
दोनों फिर से गले मिले।

प्रस्तुति - दिलीप, अलवर, राजस्थान



मंजू, तीसरी, भोपाल ,म.प्र.



भारती यादव, दूसरी, भोपाल, म.प्र.

कैसा होगा?

क्या होगी वहाँ रेत ही रेत?
या फिर मिलेंगे सुन्दर खेत
रूठा होगा धरा से अम्बर
या जल बरसाते बादल घर घर

तपते दिन और ठण्डी रात
ऊँटों से होगी मुलाकात
जाने कैसे होंगे लोग?
कैसे होंगे उनके भोग?

मीलों फैली बंजर धरती
मन उदास और आँखें नम सी
माना जीवन वहाँ नहीं आसान
फिर भी चाहूँ मैं जाना राजस्थान

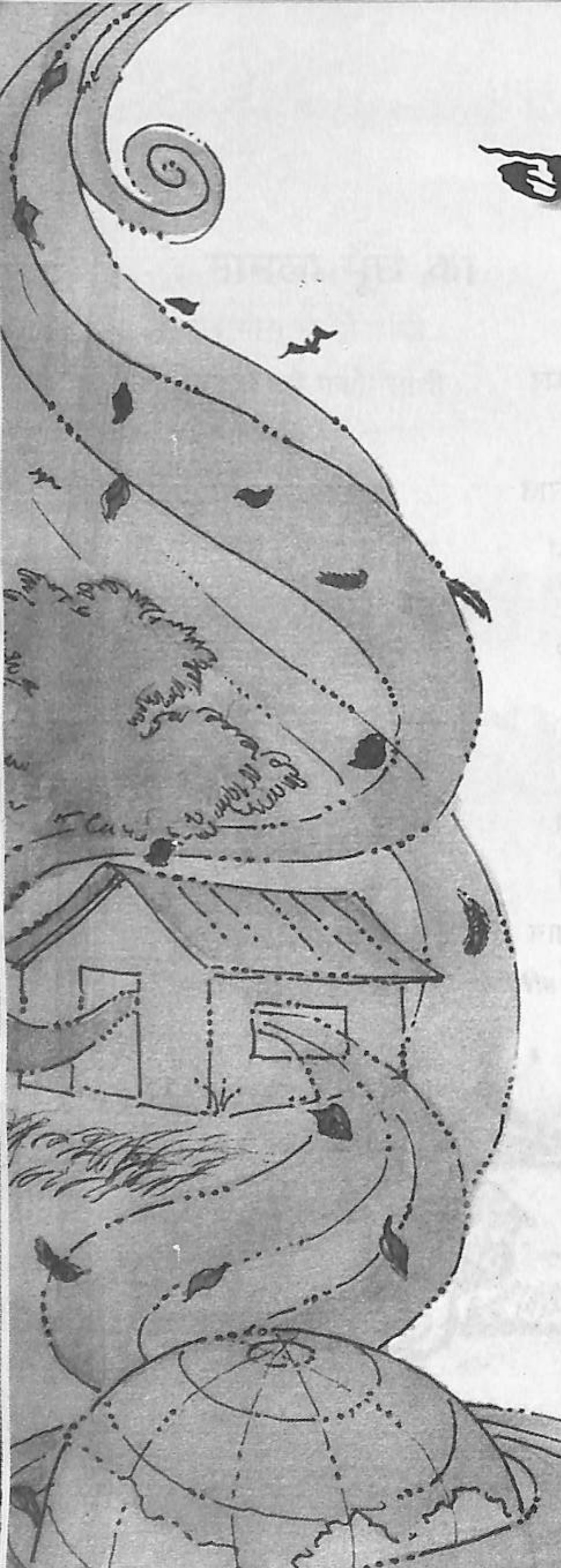
ईशान, कुरुक्षेत्र, हरियाणा



आर्यन मिश्र, छठीं, महू, म.प्र.

बसंती हवा

- केदारनाथ अग्रवाल



हवा हूँ हवा मैं
बसंती हवा हूँ।
सुनो बात मेरी-
अनोखी हवा हूँ
बड़ी बावली हूँ,
बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फिकर है,
बड़ी ही निडर हूँ।
जिधर चाहती हूँ
उधर घूमती हूँ,
मुसाफिर अजब हूँ,
न घर-बार मेरा,
न उद्देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की,
न प्रेमी, न दुश्मन,
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ।
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

जहाँ से चली मैं,
जहाँ को गई मैं,
शहर, गाँव, बस्ती,
नदी, रेत, निर्जन,
हरे खेत, पोखर,
झुलाती चली मैं,
झुमाती चली मैं
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ।

चढ़ी पेड़ महुआ,
थपाथप मचाया,
गिरी धम्म से, फिर,
चढ़ी आम ऊपर,
उसे भी झकोरा,
किया कान में कू,
उतरकर भगी मैं,
हरे खेत पहुँची-
वहाँ, गेहुँओं में,
लहर खूब मारी।
पहर दो पहर क्या
अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं!



खड़ी देख अलसी
लिए शीश कलसी,
मुझे खूब सूझी-
हिलाया-झुलाया
गिरी पर न कलसी।
इसी हार को पा,
हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों,
हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ!

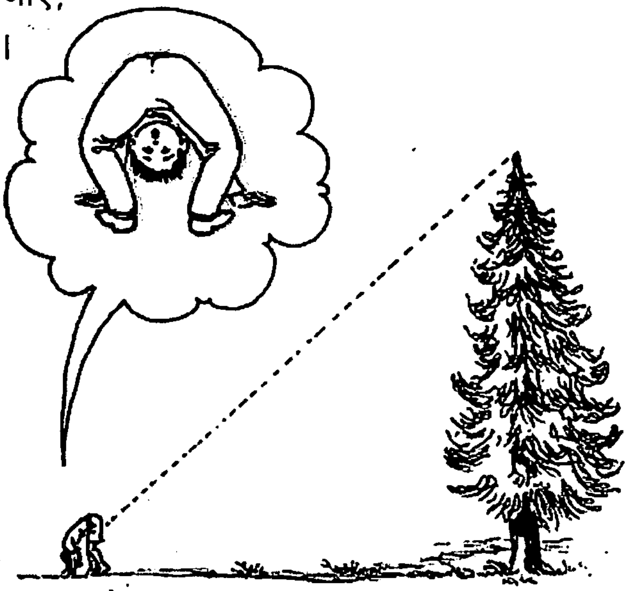
मुझे देखते ही
अरहरी लजाई,
मनाया-मनाया
न मानी, न मानी।
उसे भी न छोड़ा-
पथिक आ रहा था,
उसी पर ढकेला।
हँसी, ज़ोर से मैं,
हँसी सब दिशाएँ,
हँसे लहलहाते
हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती
भरी धूप प्यारी,
बसंती हवा में
हँसी सृष्टि सारी।
हवा हूँ हवा मैं
बसंती हवा हूँ!!



चित्र - विवेक वर्मा

कैसे नापोगे ऊँचाई

अफ्रीका की एक जनजाति का ऊँचाई नापने का यह एक नायाब तरीका है। मान लो तुम्हें किसी पेड़ की ऊँचाई पता करनी है। तो चित्र में दिखाए तरीके से झुक जाओ। तुम्हें अपनी टाँगों के बीच से पेड़ के सबसे ऊपरी सिरे को देखना है। इस तरह झुके-झुके ही पेड़ से दूर-दूर होते जाओ। जैसे ही तुम्हें पेड़ का ऊपरी सिरा दिखाई दे जाए, वहाँ रुक जाओ। अब पेड़ से इस दूरी को नाप लो (क)।



अब कोई ऐसी चीज़ देखो जिसकी ऊँचाई तुम्हें पता है। मान लो कि तुम्हें किसी खम्बे की ऊँचाई (ख) मालूम है। अब पेड़ की ऊँचाई पता करने वाली क्रिया दोहराओ। देखो कि तुम्हारे यूँ झुके-झुके कितनी दूरी पर होने से खम्बे का ऊपरी सिरी दिखाई देने लगता है। मान लो कि यह दूरी ग है-

तो पेड़ की ऊँचाई होगी -

$$\frac{\text{खम्बे की ऊँचाई(ख)} \times \text{पेड़ से उसके सिरे दिखने की दूरी (क)}}{\text{खम्बे का ऊपरी सिरा दिखने तक उसकी तुमसे दूरी (ग)}}$$

एक आसान लगने वाली मुश्किल...



टीवी में एक सॉफ्ट ड्रिंक के विज्ञापन में कहते हैं 'पियो सर उठा के।' इस पर एक बच्ची बोली, 'अम्मा अगर इसे स्ट्रॉ से पिएँगे तब तो सर उठा कर नहीं पी सकते न।' दम तो है बात में। लेकिन क्या ऐसी जुगत हो सकती है कि ड्रिंक भी हो, स्ट्रॉ भी हो पर पिया न जा सके...? एकदम आसान। इसमें जगह-जगह सुई से छेद कर दो। अब देखो। क्या इसके अलावा भी कोई जुगत है???

पैर घूमें, हाथ लिखें...

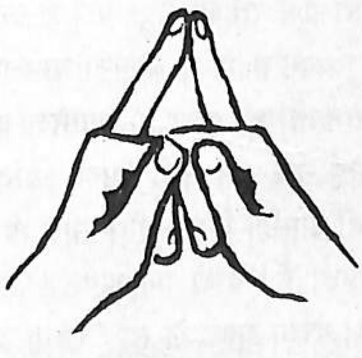
शुरू करते हैं एक करतब से। एक कॉपी और पेन ले लो। टेबिल के पास एक कुर्सी खींचकर बैठ जाओ। कॉपी और पेन टेबिल पर रख दो। अब अपनी टाँग जो इस समय टेबिल के नीचे होगी... उसे वहीं रखे रहो और दाहिने या बाएँ पैर को एक गोल घेरे में घुमाने की कोशिश करो। पाँच-सात बार अभ्यास कर लो फिर आगे बढ़ते हैं। कर लिया? अब फिर से पैर घुमाना है पर वैसे नहीं जैसे अभी-अभी तुम घुमा रहे थे। ज़रा-सा अलग। अलग ऐसे कि अभी जिस दिशा में घुमा रहे थे अब उसकी उल्टी दिशा में घुमाओ।

अब ज़रा अपना नाम इस कॉपी में लिख लो। है न आसान। पैर गोल-गोल घुमाओ और उसी दौरान कॉपी में अपना नाम लिखो। क्या हुआ? ज़रा सोचो ऐसा क्यों हुआ होगा?●



उँगलियाँ हटाकर दिखाओ...





चित्र के अनुसार अपनी उँगलियाँ जमा लो। तुमने देख लिया न, दोनों हथेलियों की सबसे छोटी उँगली के पास वाली उँगली खड़ी रखना है। अब दो चीज़ें करना है। एक तो झुकी हुई उँगलियों को एक दूसरे की तरफ ले जाने की कोशिश करो ताकि वे एक दूसरे से अच्छी तरह सटी रहें। दूसरे खड़ी हुई उँगलियों को चिपका कर रखो। उँगलियों को इसी स्थिति में रखते हुए क्या तुम खड़ी उँगलियों को अलग कर सकते हो? एक बार और कोशिश करके देखो। ●

चित्र- विवेक

मोगली के कारनामे

'मोगली के कारनामे' प्रसिद्ध लेखक रुडयार्ड किपलिंग की चर्चित पुस्तक 'द जंगल बुक' का हिन्दी अनुवाद है।

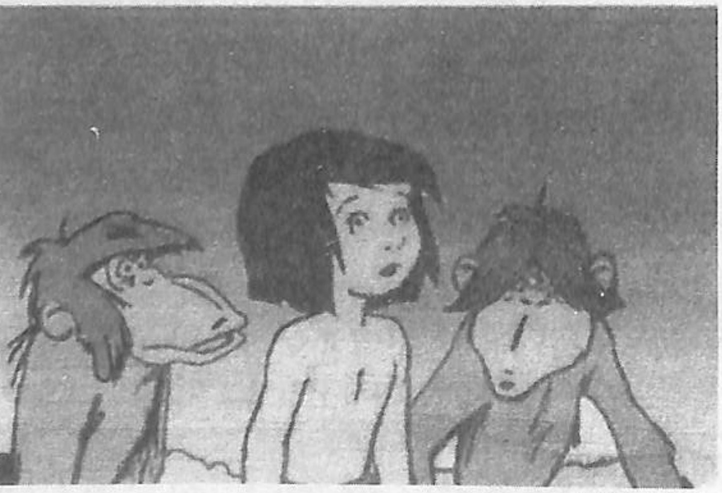
रुडयार्ड किपलिंग का जन्म सन् 1865 में मुंबई में हुआ था। उन्होंने बच्चों के अलावा बड़ों के लिए भी लिखा। 1907 में किपलिंग को नोबल पुरस्कार मिला।

जंगल बुक पर अंग्रेजी ही नहीं हिन्दी में भी टी.वी. धारावाहिक बन चुका है। गुलज़ार ने इसका शीर्षक गीत - 'चड्डी पहन के फूल खिला है' लिखा था जो बच्चों को बेहद पसन्द आया। प्रस्तुत है इस पुस्तक का आरम्भिक अंश।



"अब यहाँ तुम ये समझ लो कि जंगल के कानून में ये लिखा हुआ है कि झुण्ड में किसी बच्चे को शामिल करने पर यदि एतराज़ की एक भी आवाज़ उठे तो बच्चे को शामिल तभी किया जाएगा तब उसके हक में कम से कम दो भेड़िये बोलें। ज़रूरी ये भी है कि बच्चे के हक में बोलने वाले भेड़िये उसके माँ-बाप न हों।

"इस बच्चे की तरफदारी कौन करना चाहता है?" झुण्ड के सरदार भूरा भेड़िया अकेलेराम ने अपनी ऊँची चट्टान पर बैठे-बैठे पूछा - "हम आज़ाद लोगों में कोई है जो इस बच्चे की तरफदारी करने को तैयार है?" चारों तरफ सन्नाटा पसरा रहा। कहीं से कोई जवाब नहीं। माता भेड़िये को ये मालूम था कि बच्चे के हक में लड़ने का ये आखिरी मौका है, लिहाज़ा वो उठ खड़ी हुई। भेड़ियों की पंचायत में भेड़ियों के अलावा यदि किसी को अपनी बात कहने का हक था तो वह था बलू। हमेशा ही उनींदे से रहने वाले मोटे-तगड़े बलू का जिम्मा था भेड़िये के बच्चों को जंगल का कानून पढ़ाना। बूढ़े बलू को पूरे जंगल में अपनी मनमर्ज़ी से कहीं भी आने-जाने की आज़ादी थी क्योंकि वो सिर्फ सूखे फल, जड़ें और शहद खाता था। काफी देर से चुपचाप बलू अपने पिछले पैरों के बल सीधा खड़ा था।



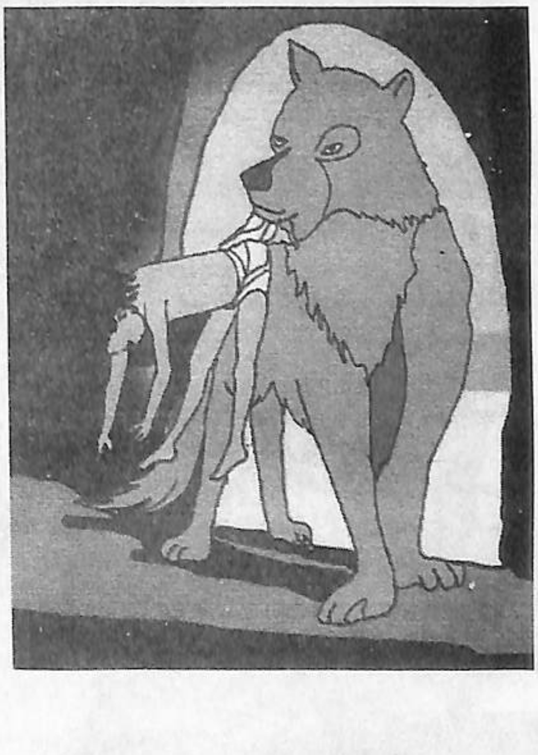
"इन्सानी बच्चा! तुम इन्सान के बच्चे की बात कर रहे हो?" - बलू ने कहा- "मैं इस बच्चे की तरफ से बोलना चाहता हूँ। इन्सान के बच्चे को झुण्ड में शामिल करने से हमें कोई नुकसान नहीं। मुझे ज़्यादा लफ्फाज़ी नहीं आती। मैं तो सीधे-सीधे ही अपनी बात कहता हूँ। बच्चे को झुण्ड में शामिल होने दो। बच्चा झुण्ड के साथ रहेगा और उन्हीं के जैसा हो जाएगा। मैं खुद उसे पढ़ाऊँगा।"



चट्टान से अकेलेराम की आवाज़ आई- "ये तो ठीक है, लेकिन हमें एक और तरफदार चाहिए। बलू हमारे बच्चों को पढ़ाता है और उसने अपनी बात हमारे सामने रख दी है। क्या कोई और तैयार है बच्चे के हक में कुछ कहने को?"

इतने में एक काली छाया घेरे के बीचों-बीच प्रकट हुई। ये बघीरा था - काला चीता। काला चीता एकदम पूरा काला था। एकदम स्याही के माफिक। चीते की काली खाल अँधेरे में ऐसे चमक रही थी जैसे रेशमी कपड़ा गीला होने पर दिखता है। बघीरा को हर कोई जानता था और कोई उससे पंगा लेने की हिम्मत नहीं करता था क्योंकि बघीरा तबाकी जितना चालाक, जंगली भैंसे जितना बेफ्रिका और ज़ख्मी हाथी जितना बेदर्द और गुस्सैल था। लेकिन इस सबके बावजूद बघीरा की आवाज़ बेहद नर्म और मुलायम थी। जब वो बोलता था तो ऐसा लगता था जैसे किसी पेड़ से शहद टपक रहा हो।

उसने अपनी मुलायम आवाज़ में कहना शुरू किया - "अकेलेराम और मेरे आज़ाद साथियो! मुझे तुम्हारी इस पंचायत में बोलने का कोई हक नहीं है लेकिन जंगल का कानून ये कहता है कि यदि किसी छोटे बच्चे को मारने में कोई शक शुबहा हो तो उस बच्चे की जान सही कीमत देकर खरीदी जा सकती है। और कानून ये नहीं कहता कि कीमत कौन चुका सकता है या कौन नहीं। मैं सही बोल रहा हूँ न?"



सबेरे से भूखे कुछ नौजवान भेड़ियों को बघीरा की बात बहुत पसंद आयी- "बहुत खूब! बहुत खूब! सुनो, सुनो, बघीरा की बात सुनो। इस बच्चे को कीमत चुका कर खरीदा जा सकता है। यही जंगल का कानून है।"

"मुझे मालूम है कि मुझे यहाँ बोलने का काई हक नहीं है इसीलिए मैं आपसे इजाज़त लेता हूँ - यहाँ से जाने के लिए।" बघीरा ने कहा।

"तुम्हें जाने की इजाज़त नहीं। बोलने की इजाज़त है। तुम तो आगे बोलो क्या बता रहे थे!" बीसों आवाज़ें गूँजीं।

जंगल का निशा गान

चील जंगल में लाती है रात
चमगादड़ बैठ जाता है लगा कर घात
मवेशी हो जाते हैं बाड़े में बन्द
तुम आज़ाद हो सबेरे तक मेरे संग
रात का ये वक्त है ज़िन्दगी के सुरूर का
ये वक्त है पंजों, दाँतों और नखों पर गुरूर का
अरे सुनो, मुबारक हो तुम्हें शिकार का जुनून
ज़िन्दा रहोगे, जब तक मानोगे जंगल का कानून



"एक नंगे बच्चे की जान लेना बहुत शर्म की बात होगी। अलावा इसके, जब ये बड़ा हो जाएगा तो तुम्हें इसके साथ खेल-कूद में बहुत मज़ा आएगा। बलू तो बच्चे के हक में अपनी बात कह ही चुका है। बलू की बात में चार शब्द और जोड़ना चाहता हूँ - ये चार शब्द हैं - 'एक मोटा-ताज़ा बैल' - और ये बैल मैंने हाल ही में मारा है। बैल यहाँ से नज़दीक ही है - एक मील के भीतर ही। अब मुझे बताओ कि इन्सान के इस बच्चे को झुण्ड में शामिल करने में किसी को क्या तकलीफ है? क्या सचमुच ये बड़ी मुश्किल बात है?"

बघीरा की बात सुनकर भेड़ियों में मिली-जुली आवाज़ों का शोर पैदा हो गया। "क्या बात है? ठण्ड के महीनों में तो ये नाज़ुक सा बच्चा वैसे ही मर जायेगा। ठण्ड से नही मरा तो गर्मी में झुलस कर मर जाएगा। आखिर एक नन्हे मेंढक जैसा नंगा बच्चा हमारा क्या नुकसान कर सकता है? आने दो इसे झुण्ड में। अरे बघीरा भाई, कहाँ है अपना बैल? चलो, चलो! शामिल करो बच्चे को झुण्ड में।"



"ध्यान से देखो। ध्यान से देख लो - ओ मेरे भेड़ियो!" ऊँची चट्टान पर बैठे अकेलेराम ने सिर्फ इतना ही कहा। इसके बाद एक-एक कर के सब भेड़िये आये और उन्होंने निगाह भरके इन्सान के बच्चे को देखा। इस दौरान अकेलाराम चुपचाप अपनी चट्टान पर बैठा कुछ और सोचता रहा। बच्चे को देखने के बाद सब भेड़िये मरे हुए बैल को खाने के लिए पहाड़ी से नीचे उतर आए और

ऊपर सिर्फ अकेलाराम, बघीरा, बलू और बापू और माँ वहाँ बचे। दूर कहीं अँधेरे में शेरखान अब भी दहाड़ रहा था क्योंकि वो बहुत गुस्से में था और गुस्सा उसे इस बात का था कि नन्हा मोगली उसके हवाले नहीं किया गया।

"और दहाड़ो। जी भर के दहाड़ो।" बघीरा ने अपनी मूँछों में मुस्कुराते हुए कहा- "देखना एक दिन ऐसा आएगा जब यही नंगा-बच्चा, इन्सान का बच्चा तुम्हें अपनी धुन पर नचायेगा। उस दिन तुम्हारी दहाड़ आज जैसी नहीं होगी, उसमें गुस्से की जगह दर्द होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो ये समझना कि इन्सानों के बारे में मेरी जानकारी दो कौड़ी की भी नहीं है।"

अकेलेराम ने कहा- "चलो, ये सब अच्छे से निपट गया। आदमी और उसके बच्चे बड़े बुद्धिमान होते हैं। ये बच्चा भी कभी वक्त पड़ने पर हमारी मदद ही करेगा।"

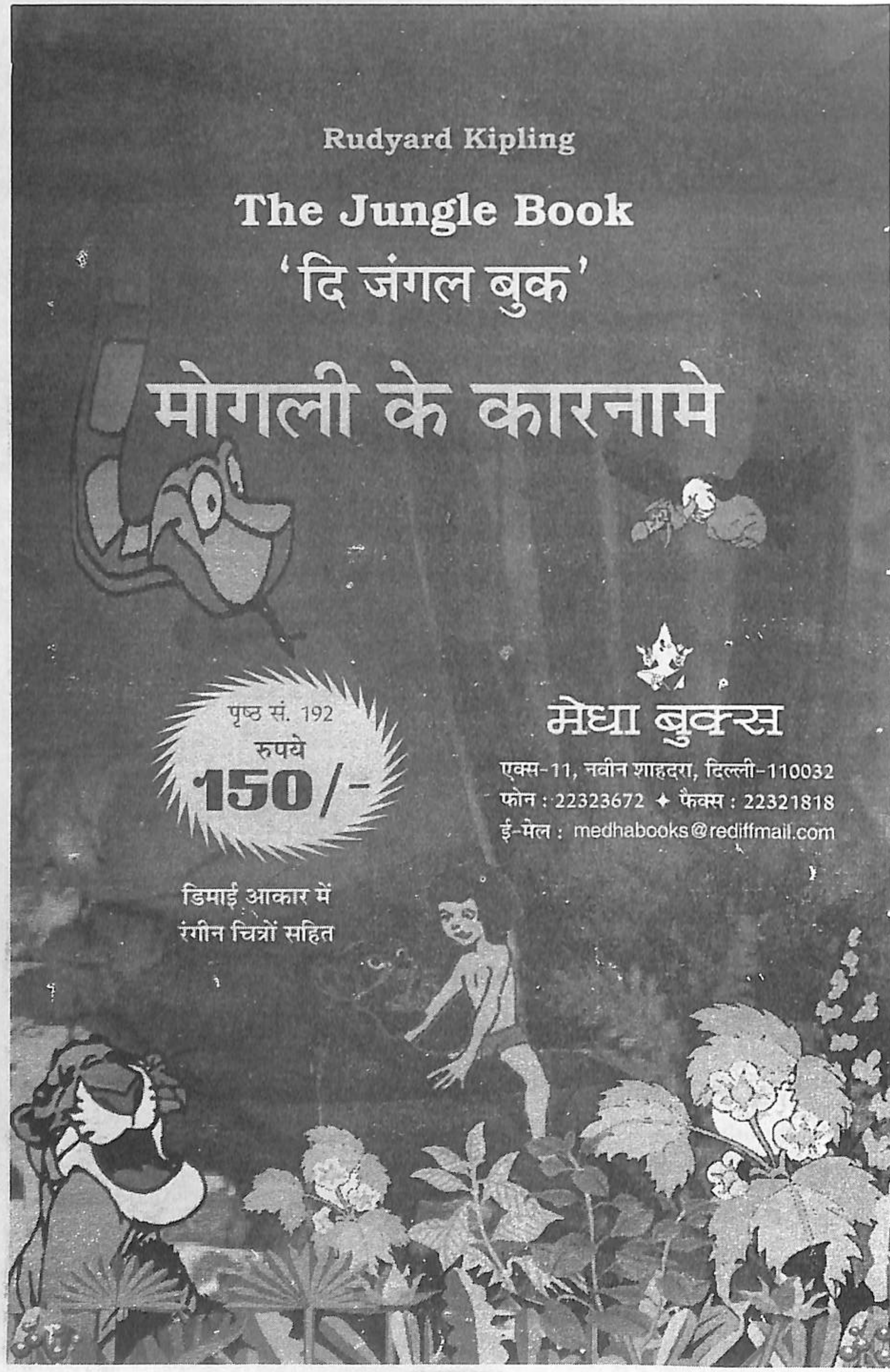
"सच कह रहे हो। आखिर ऐसा वक्त कभी न कभी तो आयेगा ही। तुम हमेशा ही झुण्ड के सरदार बने रहने की उम्मीद तो कर नहीं सकते।" - बघीरा ने कहा।

जवाब में अकेलाराम चुप रहा। अब वो उस वक्त के बारे में सोच रहा था। भेड़ियों के झुण्ड के हर सरदार के साथ ऐसा होता आया है कि एक दिन उसकी ताकत उसका साथ छोड़ देती है और वो दिन पर दिन कमज़ोर होता चला जाता है। फिर एक दिन उसी के झुण्ड के भेड़िये उसे मार डालते हैं और अपने लिए नया सरदार चुन लेते हैं। फिर नया सरदार भी उस दिन का इन्तज़ार करता है कि कब उसके अपने ही साथी उसे मार डालेंगे।



"इसे यहाँ से ले जाओ" - बापू भेड़िये को अकेलेराम ने कहा- "और इसे अच्छे से ट्रेनिंग दो ताकि ये हम आज़ाद लोगों का सच्चा साथी बन सके।"

तो ये था किस्सा कि किस तरह एक बैल की कीमत चुका कर और बलू की सिफारिश से मोगली सिवनी के भेड़िया झुण्ड में शामिल हुआ। ●



Rudyard Kipling
The Jungle Book
'दि जंगल बुक'
मोगली के कारनामे
पृष्ठ सं. 192
रुपये
150/-
मेधा बुक्स
एक्स-11, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 22323672 ✦ फैक्स : 22321818
ई-मेल : medhabooks@rediffmail.com
डिमाई आकार में
रंगीन चित्रों सहित

जंगल में लंगूरों से मुलाकात

डॉ. सुरेश मिश्र



मैं इस वक्त जंगल में वन विभाग के विश्राम भवन के बरामदे में बैठा हूँ। सामने के चरागाह के एक सिरे पर मेरे कमरे से करीब सौ मीटर की दूरी पर महुए का एक घना पेड़ है। इसके ठीक बाद से जंगल शुरू हो जाता है। पेड़ के ऊपर कुछ लंगूर यानी काले चेहरे वाले बन्दर बैठे हैं। पेड़ की कोंपलें और महुए के फूल खा रहे हैं। कुछ खा रहे हैं कुछ टपका रहे हैं। इन गिरी हुई कोंपलों और फूलों को खाने के लिए वहाँ चीतल आ गए हैं। (चीतल एक किस्म का हिरण होता है जिसके शरीर पर सफेद चित्ते होते हैं।) कुछ देर बाद क्या देखता हूँ कि लंगूर खों-खों की आवाज़ निकाल रहे हैं और पेड़ के नीचे चर रहे चीतल भाग खड़े होते हैं। मैं इस आवाज़ को सुनते ही समझ गया कि लंगूरों को कोई शिकारी जानवर आसपास दिखा है जिसे देखकर वे खतरे की आवाज़ निकाल रहे हैं। जंगल में आम तौर पर इसे 'अलार्म कॉल' कहा जाता है। अलार्म कॉल सुनते ही चीतल भाग खड़े होते हैं। लंगूर और चीतल के आपसी सहयोग का यह एक नमूना है। चीतल जब खुले चरागाह में चरता है तो झुण्ड की एक सयानी मादा चौकन्नी होकर चौकसी करती है। पर पेड़ के नीचे चरते समय इन्हें पता है कि अगर कोई बाघ या तेंदुआ दिखेगा तो लंगूर खों-खों करके खतरा होने की चेतावनी देगा और ये भाग खड़े होंगे।

लंगूरों के हावभाव और उनके तौर-तरीकों को देखना मुझे बहुत पसंद है। इन्सानों की तरह उनका दो हाथों का इस्तेमाल करना और कुछ खास आवाज़ों के ज़रिए अपनी भावनाएँ ज़ाहिर करना, यह सब मुझे बहुत रोमांचक लगता है। लंगूरों की अपनी दुनिया है। उनके रहने खाने का एक खास तरीका है, बच्चे हैं, माताएँ हैं, दुलार है, आपसी भाईचारा है, आपसी रिश्ते हैं और खतरे से आगाह करने की आवाज़ भी है। सच तो यह है कि यदि जीव-जन्तुओं को चुपचाप ध्यान से देखा जाए तो उनकी ज़िन्दगी के कई रोचक पहलू सामने आते हैं।

लंगूरों के साथ सुभीता यह है कि वे इन्सानों से दूर नहीं भागते और उन्हें कम दूरी से लगातार





देखा जा सकता है। दूसरे जंगली जानवरों के साथ ऐसा नहीं है। उनके पास जाने पर वे भाग जाते हैं और उन्हें दूर से या छुपकर देखना होता है। लंगूर लाल चेहरे वाले बन्दरों से अलग होते हैं। लाल चेहरे के बन्दरों की आदतें भी अलग होती हैं। लाल चेहरे के बन्दर अक्सर बस्तियों में या उसके पास रहना पसन्द करते हैं, पर लंगूरों को जंगल में पेड़ पौधों के बीच रहना ज़्यादा पसंद है। वैसे वे बस्तियों में भी रहते हैं। मन्दिरों में, नदियों के घाटों में या तीर्थों में लंगूरों को बैठा हुआ और लोगों के हाथ से या जेब से खाने की चीज़ निकालकर खाते हुए देखा जा सकता है। इनका बर्ताव काफी दोस्ताना होता है और ये आम तौर पर लोगों पर हमला भी नहीं करते।

यह एक गलतफहमी है कि लंगूर पेड़ों पर रहते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि दिन का उनका ज़्यादातर समय ज़मीन पर बीतता है। संकट के समय या खाने के लिए वे पेड़ पर जाते हैं या फिर रात में सोने के लिए। ज़मीन पर ज़्यादा रहने के कारण लंगूर बाघ या तेंदुए का शिकार भी काफी होता है। अध्ययनों से पता चला है कि बाघ का मुख्य आहार यदि चीतल है तो दूसरे क्रम में लंगूर है।

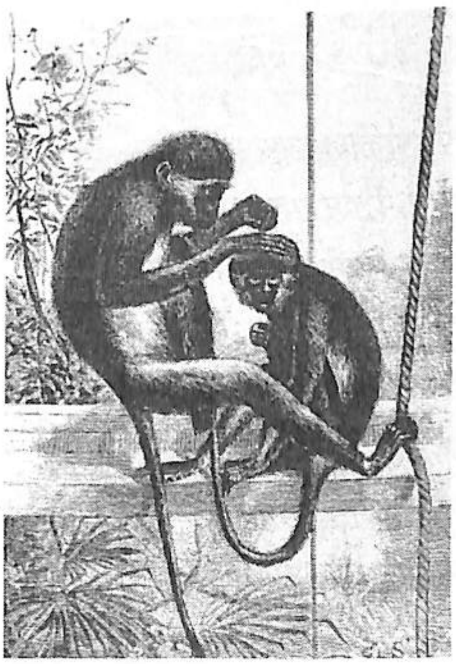
जंगल में जहाँ मैं रुका था, वहाँ मेरे कमरे की बाईं खिड़की से करीब 20 मीटर दूर बरगद का एक पेड़ था। रोज़ दोपहर बरगद की छाया में लंगूरों का झुण्ड बैठता था। उनकी गतिविधियों को देखना बहुत रोचक था। वैसा ही कुछ नज़ारा था कि जैसे छुट्टी के मौसम में एक बड़े परिवार के लोग इकट्ठा हुए हों। कुछ लंगूर निचली डालियों पर बैठे थे तो कुछ नीचे बैठे थे। जो छोटे बच्चे थे वे शान्त नहीं बैठते थे और धमाचौकड़ी कर रहे थे। उनमें कुछ हाल ही में पैदा हुए बच्चे थे जो उस वक्त माँ की गोद में बैठे हुए थे। इन नवजात बच्चों को दूसरी लंगूर मादाएँ भी अपने हाथों में ले रही थीं और दुलार रही थीं। लंगूरों में नवजात बच्चों को सभी मादाएँ बहुत प्रेम से दुलारती हैं। लंगूर आपस में एक दूसरे के बालों को ऐसे संवारते हैं जैसे वे उनमें पिस्सू या जूँ ढूँढ़ रहे हों। असल में वे आपसी भाईचारा ज़ाहिर करने के लिए यह करते हैं।

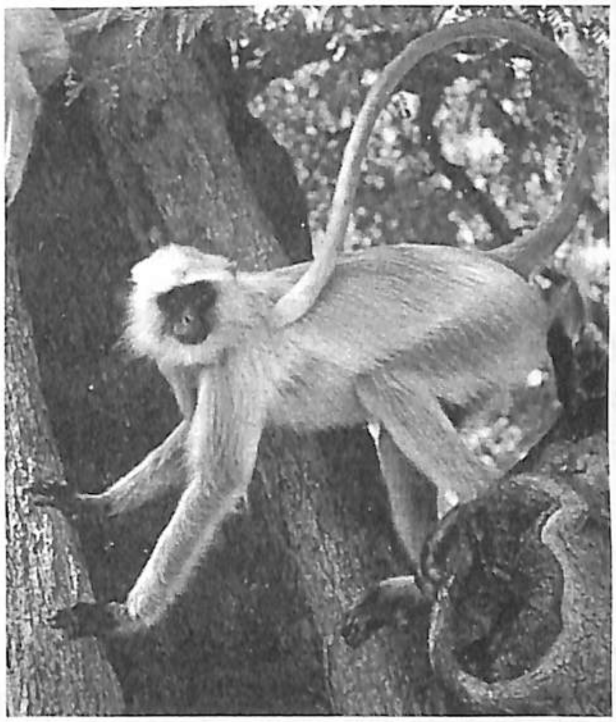
तभी मेरे कमरे के पास आकर एक जीप रुकी और लंगूर लपककर पास के पेड़ पर चढ़ने लगे। शिशु लंगूर अपनी माँ के पेट से चिपट गया और माँ उसे लेकर पेड़ पर चढ़ गई। मकाक याने लाल चेहरे की मादा बन्दर जब भागती है तो उसका



शिशु उसके पेट से नहीं चिपटता बल्कि उसकी पीठ पर चिपट जाता है। लंगूर मादा अपने बच्चे को इतना चाहती है कि यदि लंगूर का बच्चा किसी कारण मर जाता है तो कई दिनों तक उसकी माँ उसकी लाश को लिए घूमते रहती है। वह समझ ही नहीं पाती कि उसका बच्चा मर गया है। सचमुच यह दृश्य बहुत मार्मिक होता है।

लंगूरों के झुण्ड में एक नर लंगूर सबसे ताकतवर था जो उस झुण्ड का मुखिया दिखता था क्योंकि वह अपने झुण्ड के सभी लंगूरों पर धोंस जमाता रहता था। थोड़ी देर बाद मैं देखता हूँ कि एक और मज़बूत लंगूर ने मुखिया को चुनौती जैसी दी और फिर तो दोनों में ठन गई। दोनों खों-खों, किचकिचाते हुए भिड़ गए और अन्त में दूसरे वाले ने पहले वाले मुखिया को खदेड़ दिया। असल में यह झुण्ड का मुखिया बनने की और झुण्ड पर अधिकार जमाने की लड़ाई थी, जिसमें पुराना मुखिया हार गया था। झुण्ड का मुखिया सबसे ताकतवर नर लंगूर होता है और मुखिया को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। झुण्ड की मादाओं पर पहला अधिकार मुखिया लंगूर का होता है।





कभी-कभी देखा गया है कि झुण्ड का मुखिया शिशु लंगूरों को पकड़कर मार डालता है। ये शिशु लंगूर अक्सर नर होते हैं। इसका कारण एक तो यह होता है कि शिशु लंगूर के रहते हुए मादा लंगूर उसे दूध पिलाती रहेगी और जोड़ा बनाने के काम की नहीं रहेगी। बच्चा लंगूर नहीं रहेगा तो मादा लंगूर फिर से जोड़ा बनाने लायक हो जाएगी।

एक दोपहर लंगूरों की चीख-चिल्लाहट से मेरी नींद खुल गई। मैंने देखा लंगूरों के झुण्ड के सभी सदस्य एक दूसरे झुण्ड के लंगूरों से लड़ रहे हैं। काफी देर तक यह लड़ाई चली। बहुत शोर-शराबा और भाग-दौड़ हुई और जंगल हूप-हूप और किच-किच की आवाज से गूँज उठा। अन्त में बाहरी झुण्ड के लंगूरों को मौजूदा झुण्ड ने खदेड़ दिया। असल में यह इलाके की लड़ाई थी। लंगूरों के समूह का अपना इलाका होता है और उस पर कब्ज़ा करने के लिए लंगूरों के दो झुण्डों के बीच आपस में बुरी तरह लड़ाई होती है।

अब जब भी कभी तुम्हें लंगूर दिखें तो उनके तौर-तरीके ध्यान से देखना। बहुत मज़ा आएगा। ●

सा रे गा मा ...

राजेश उत्साही



फिल्में और उनके गीत हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। टेलीविज़न ने फिल्मों को और रेडियो तथा (हाल के दिनों में) मोबाइल फोन की रिंगटोन ने फिल्मी गीतों को लोकप्रिय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

फिल्मों में बच्चों को ध्यान में रखकर या उनके ऊपर कई गीत लिखे गए हैं। उनमें से कुछ बहुत मशहूर हुए हैं। कुछ साल पहले हमने चकमक में ऐसे गीतों का एक कॉलम आरम्भ किया था। कुछ समय से यह स्थगित है।

इस अंक से यह कॉलम फिर से शुरू कर रहे हैं, लेकिन थोड़े बदले रूप में। बदला हुआ रूप क्या है, यह तो तुम स्वयं धीरे-धीरे जानोगे ही। हाँ, इतना तय है कि इस कॉलम में दिए जाने वाले गीत ऐसे होंगे, जिन्हें तुम स्कूल में होने वाले विभिन्न समारोहों में, मोहल्ले में होने वाली गतिविधियों में या फिर अपने दोस्तों के बीच गा-गुनगुना सकोगे।

कॉलम का आरम्भ कर रहे हैं 1954 में आर. के. फिल्मस् के बैनर में बनी फिल्म **बूट पॉलिश** के गीत से। इस फिल्म का मशहूर गीत - 'नन्हे मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है' - तुमने कई बार सुना होगा। पर यहाँ चर्चा एक अन्य गीत की कर रहे हैं। बूट पॉलिश अनाथ बच्चों की मुश्किलों की थीम पर बनी थी। जिसमें ऐसे ही दो बच्चे बूट पॉलिश करके अपनी रोज़ी कमाते हैं। बूट पॉलिश करते हुए वे क्या कहते हैं, यह इस गाने में है। बूट पॉलिश वाले ऐसे हमउम्र तुम्हें बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, किसी बड़े बाज़ार में या आसपास आज भी मिल जाएँगे।

फिल्म - बूट पॉलिश

गीत - शैलेन्द्र

गायक - आशा भोंसले, मन्नाडे और मधुबाला झवेरी

संगीत - शंकर-जयकिशन

ठहर ज़रा ओ जाने वाले
ठहर ज़रा ओ जाने वाले
बाबू मिस्टर गोरे काले
कब से बैठे आस लगाए
हम मतवाले पॉलिश वाले
ठहर ज़रा ओ जाने वाले - (2)

ये काली पॉलिश एक आना
ये ब्राउन पॉलिश एक आना
जूते की मालिश एक आना
हर माल मिलेगा एक आना
ना ब्लैसम ना पाखोड़ी है
ना पगड़ी है न चोरी
छोटी-सी दुकान लगाए
हम मतवाले पॉलिश वाले
ठहर ज़रा ओ जाने वाले - (2)

मेहनत का फल मीठा मीठा
हाँ भई, हाँ रे
भाग किसी का रूठा-जूठा
ना भई, ना रे
मेहनत की एक रूखी-रोटी
हाँ भई, हाँ रे
और मुफ्त की दूध मलाई
ना भई, ना रे
लानत जो फोकट की खाए
लानत जो हराम की खाए
हम मतवाले पॉलिश वाले
ठहर ज़रा ओ जाने वाले
बाबू मिस्टर गोरे काले
कब से बैठे आस लगाए
हम मतवाले पॉलिश वाले - (2)

पंडित जी मंतर पढ़ते हैं
वो गंगा जी नहलाते हैं
हम पेट का मंतर पढ़ते हैं
जूते का मुँह चमकाते हैं
पंडित को पाँच चवन्नी है
हमको तो एक इकन्नी है
फिर भेदभाव ये कैसा है
जब सबको प्यारा पैसा है
ऊँच-नीच कुछ समझ न पाएँ
हम मतवाले पॉलिश वाले (2)

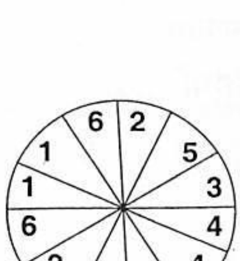
ठहर ज़रा ओ जाने वाले
बाबू मिस्टर गोरे काले
कब से बैठे आस लगाए
हम मतवाले पॉलिश वाले

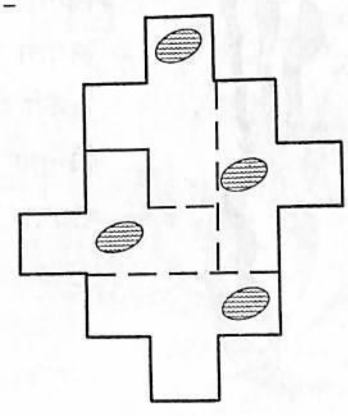
जनवरी 2006 की माथापच्ची एवं चित्र पहेली के हल

XI + I = X

इस समीकरण को बिना काटे उल्टा कर दिया जाये तो -

X = I + XI





प	ग	ड़ी		बा	र	ह	सिं	गा
ह						की		ज
ल	हँ	गा		अ	स	म		र
वा		लि		ना				
न		व	ब्ब	र	शे	र		चा
				दा		जा		र
कु		क	मा	ना		ई	ना	मी
र		ला						ना
ता	ज	म	ह	ल		क	टा	र

माथा पच्ची



1



तुम्हें अगर बिल्कुल एक जैसी 9 गेंदे दे दी जाएँ - आठ बराबर वज़न की और एक ज़रा ज़्यादा वज़नी। गेंदे दिखने में एक-सी हैं, एक गेंद का वज़न भी इतना ज़्यादा नहीं कि फर्क स्पष्ट रूप से पता चल जाए।

हाँ, पर तराजू में तो यह फर्क दिख ही जाएगा। तो अगर तुम्हें एक तराजू भी दे दी जाए। तो क्या तुम सिर्फ दो बार तौलकर ज़्यादा वज़नी गेंद को पहचान सकते हो?

2

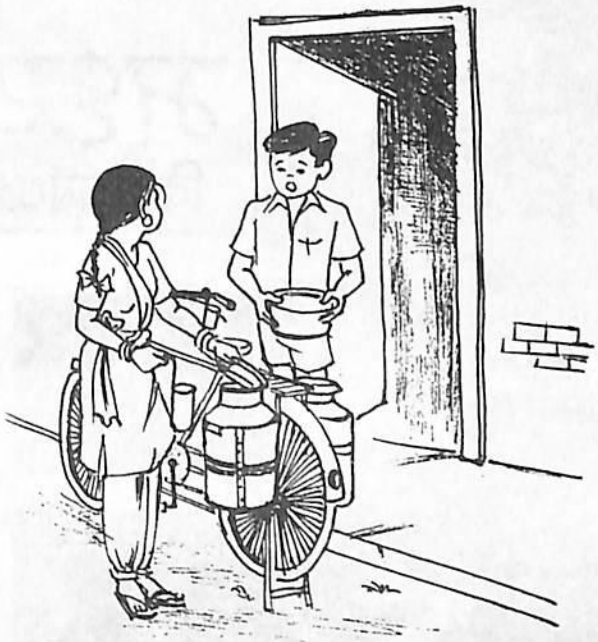


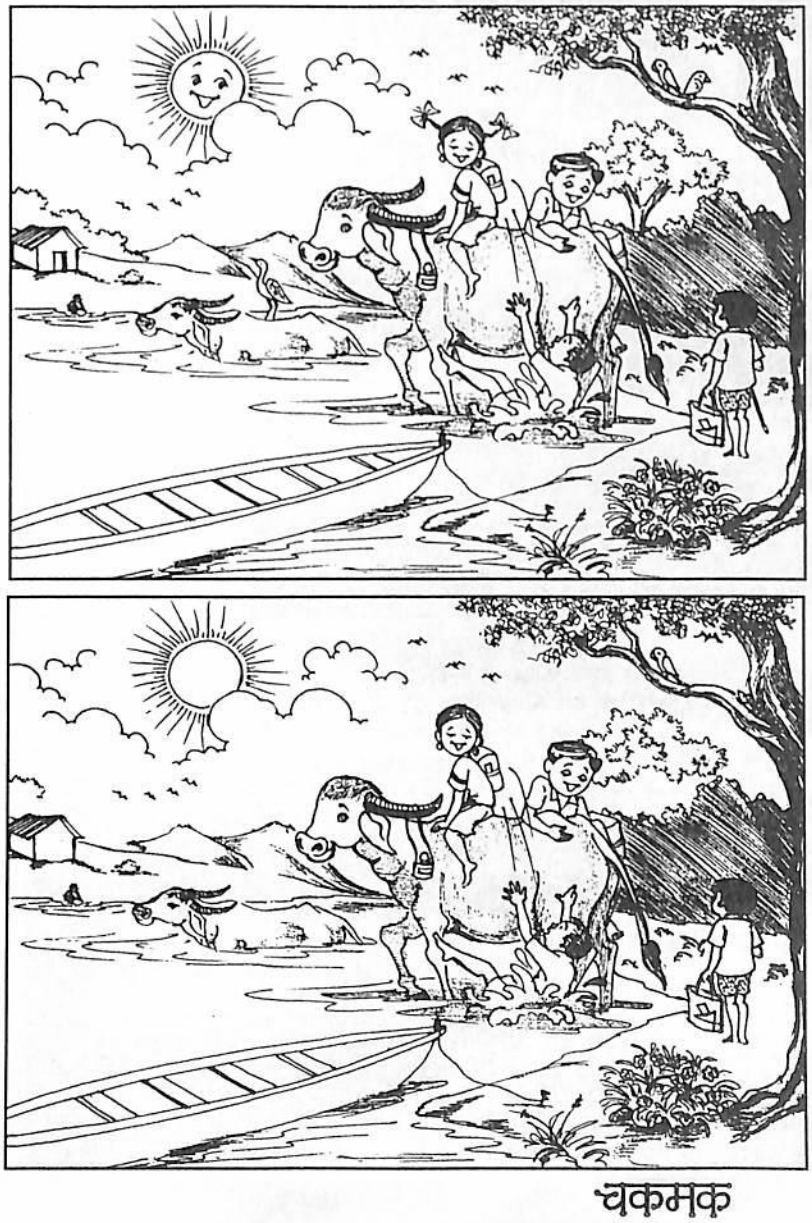
इस बार जाल से मछलियों को नहीं बल्कि इन महाशय को बचाना है। अंत में किनारा है। तुम्हें क्या लगता है, क्या इन लहरों से निकलकर किनारे तक पहुँचा जा सकता है?

3

तुम्हें आज दूध वाली से चार लीटर दूध चाहिए।

लेकिन दूधवाली के पास तो चार लीटर का नाप वाला बर्तन ही नहीं है। हाँ, पर उसके पास पाँच लीटर और तीन लीटर की नाप वाले बर्तन हैं। क्या इन दोनों नापों से काम चल जाएगा? यानी चार लीटर दूध नाप सकते हैं?





4

इन दो चित्रों में दस अंतर हैं। क्या तुम पाँच मिनिट में सभी दस अंतर ढूँढ सकते हो? कोशिश करो।

मध्यप्रदेश
वित्त प्रबंधन की नई तस्वीर







दुष्यन्त कुमार ने कहा है-

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए

कुछ इसी तर्ज पर मध्यप्रदेश में वित्त प्रबंधन की दशा और दिशा बदली है।



मध्यप्रदेश के वित्त प्रबंधन की बढ़ती साख पिछले दो वर्षों में विकास ऋण की आवश्यकता से अधिक पूर्ति से स्वयं स्पष्ट है। इसे हमें और मजबूती प्रदान करनी है ताकि प्रदेश में विकास के जनांदोलन बनने के कार्य को और गति मिल सके।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

जब 16 साल बाद ऐसी स्थिति बनी कि सरकार को एक भी दिन का
ओवर ड्राफ्ट न करना पड़ा हो। यह भी तब जबकि पूँजीगत व्यय में 85 प्रतिशत वृद्धि हो गयी हो।
विकास ऋण को रोजमर्रा के कार्यों पर खर्च करने की प्रवृति को पलट दिया गया हो।
शिक्षा, सड़क, सिंचाई में पिछले वर्षों की तुलना में दोगुना खर्च किया गया हो तथा
स्वास्थ्य, बिजली के क्षेत्र में खर्च काफी बढ़ा हो।
बिना कोई टैक्स लगाये राजस्व आमदनी करीब 15 प्रतिशत बढ़ जाए।
प्रदेश की अब तक की सबसे बड़ी वार्षिक योजना, एक भी पैसा कम किये बिना
योजना आयोग मंजूर करे और वित्त प्रबंधन सराहे भी।
तब क्या यह संकेतक नहीं बताते कि प्रदेश वित्त प्रबंधन में
अग्रणी राज्यों में शामिल हो गया है।

अभी पड़ाव आया है मंजिल भी आयेगी
स्वावलम्बी मध्यप्रदेश की



नन्हा उल्लू

जब वह दो साल का हो गया, तो नन्हे उल्लू ने सवाल पूछना शुरू किया।

पूरी रात वह अपनी अम्मा के संग सितारों के नीचे बैठा रहता।

"आसमान में कितने सितारे हैं?"

उसने एक रात अपनी अम्मा से पूछा।

"बहुत से," अम्मा ने जवाब दिया।

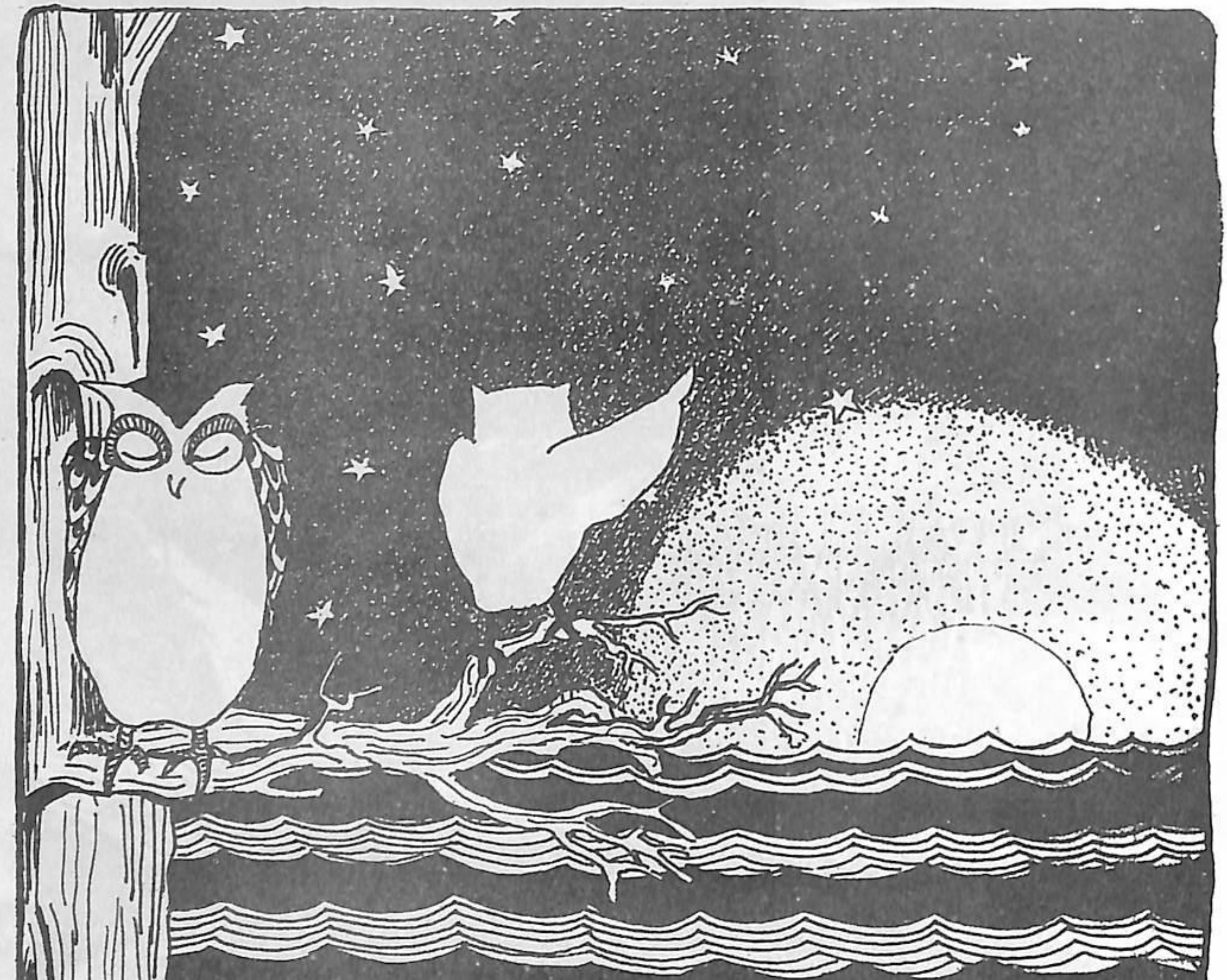
"कितने?" नन्हे उल्लू ने आसमान की ओर देखते हुए पूछा।

उसकी अम्मा मुस्कराने लगी, "तुम गिनकर देख लो"

एक, दो, तीन, चार...

एक सौ एक, एक सौ दो,

एक सौ तीन, एक सौ चार...."



जब सूरज निकला, नन्हा उल्लू तब भी गिन रहा था।

"एक हज़ार एक,
एक हज़ार दो...."

"कितने सितारे हैं आसमान में?" अम्मा ने नन्हे उल्लू से पूछा।
"इतने कि मैं गिन भी नहीं सकता" नन्हे उल्लू ने पलकें झपकाते हुए कहा।

और अपना सिर अपने पंखों में छिपाकर वह झट से सो गया।



अगली रात

नन्हे उल्लू ने एक बार फिर आसमान की ओर देखा।

"अम्मा, आसमान कितना ऊँचा है?"

"बहुत ऊँचा," अम्मा ने जवाब दिया।

"कितना ऊँचा?" नन्हे उल्लू ने फिर पूछा।

"जाओ जाकर देख लो," अम्मा ने कहा।

तो नन्हा उल्लू ऊपर आसमान में उड़ लिया।

अपने पेड़ से बहुत ऊपर।

उसने बहुत ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ाये।

वह बादलों से भी ऊपर उड़ रहा था।

लेकिन वह जितना ऊपर जाता,

आसमान और भी ऊपर उठता चला जाता।

सुबह जब वह अपने पेड़ पर उतरा,

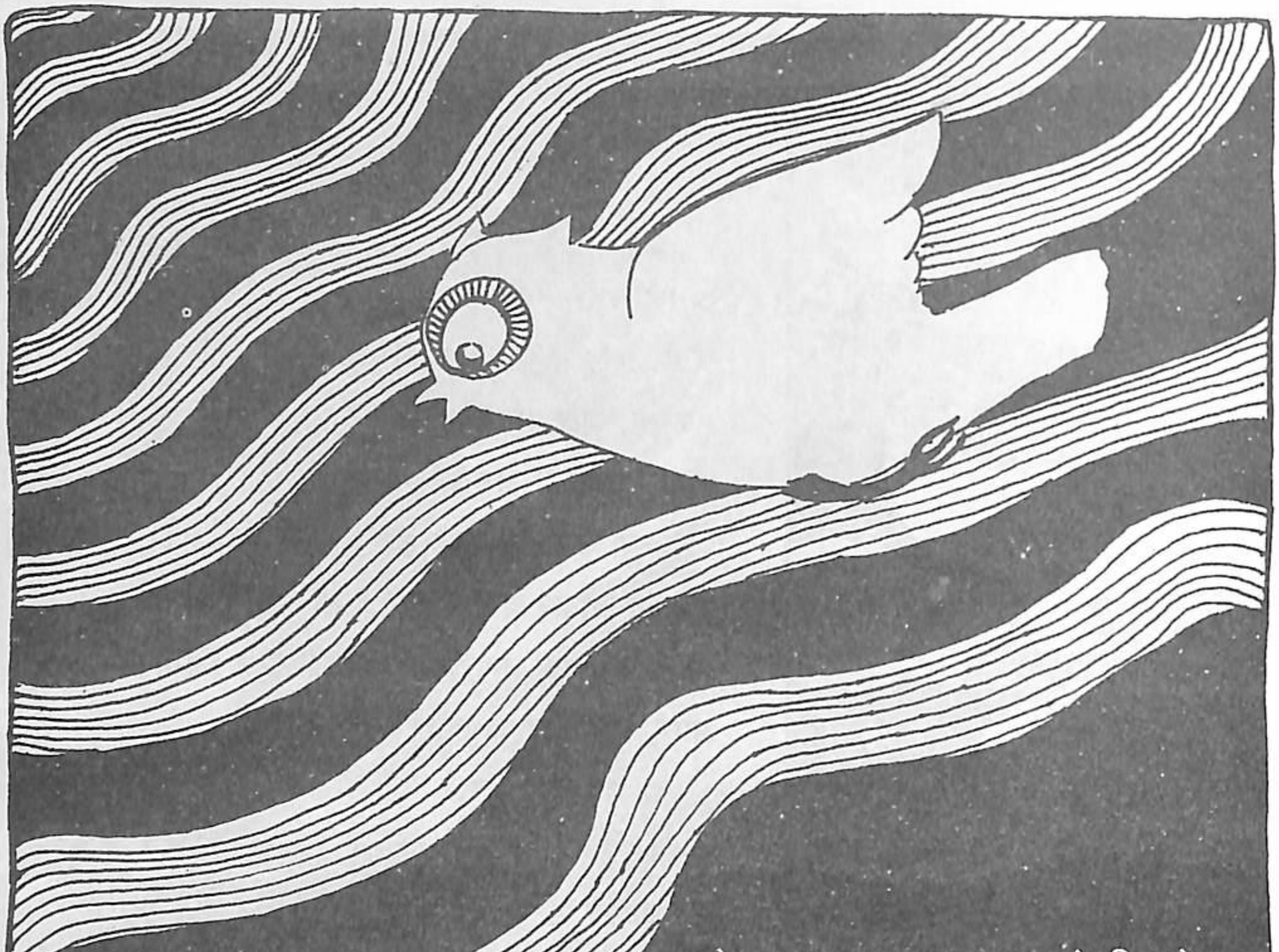
वह बहुत थक चुका था।

"तो कितना ऊँचा है आसमान?" अम्मा ने पूछा।

"इतना ऊँचा कि मैं उड़कर पहुँच ही नहीं सकता।"

नन्हे उल्लू ने जवाब दिया।

फिर उसने अपनी आँखें बन्द कीं और झट से सो गया।



अगली रात नन्हे उल्लू ने समुद्र की लहरों की आवाज़ सुनी।

"समुद्र में कितनी लहरें हैं?" उसने अपनी अम्मा से पूछा।

"बहुत-सी लहरें हैं," अम्मा बोली।

"कितनी?" नन्हे उल्लू ने पूछा।

"जाओ, जाकर गिन लो," अम्मा ने जवाब दिया।

तो नन्हा उल्लू उड़कर समुद्र के किनारे आ पहुँचा।

वह तट पर खड़ा होकर लहरों को गिनने लगा।

"एक दो, तीन, चार....."

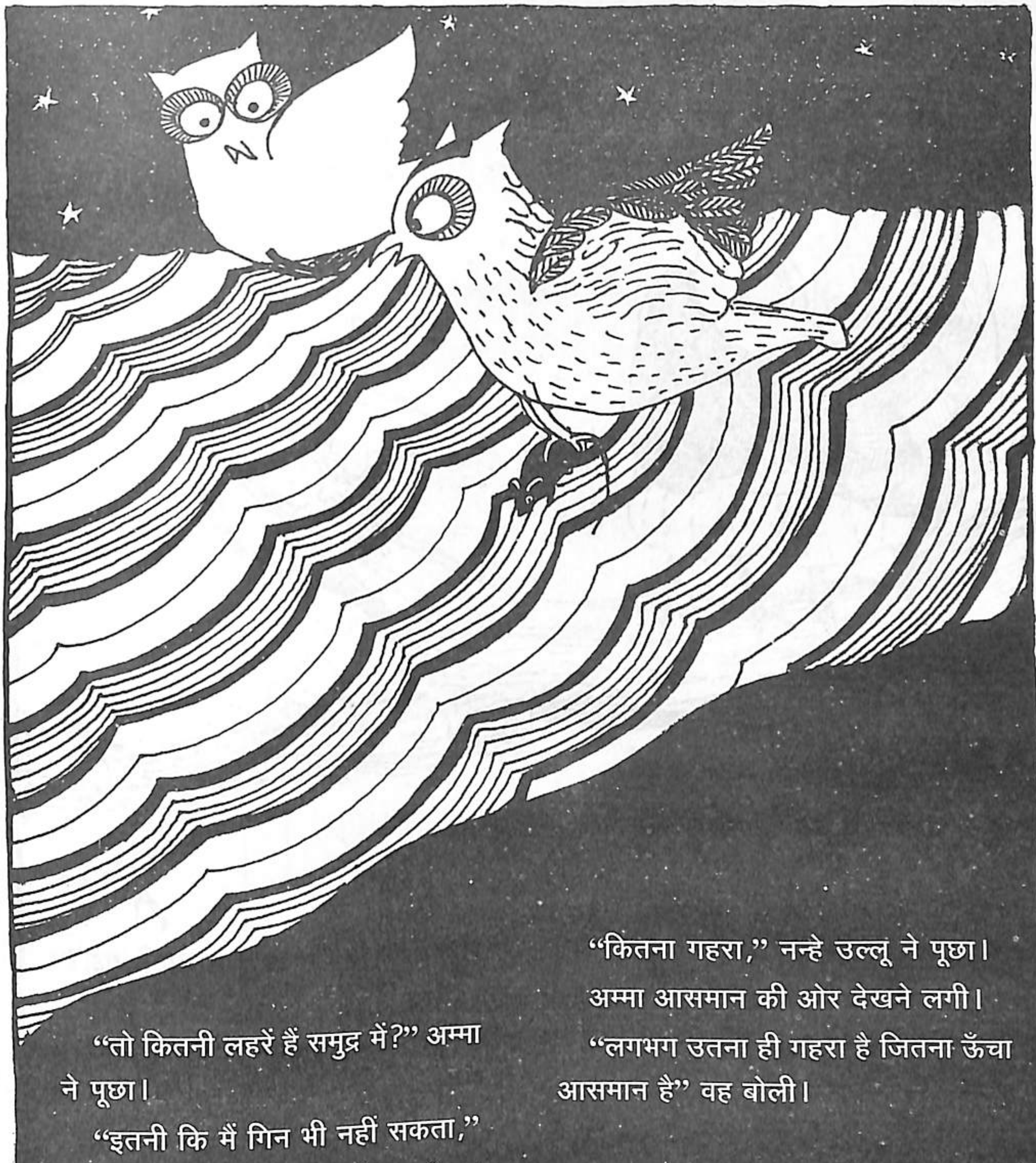
पर वह कितनी लहरों को गिनता! और-और लहरें किनारे से टकराने लगतीं।

"एक हज़ार एक,

एक हज़ार दो...."

और जब सूरज निकला तो उसने देखा कि समुद्र अब भी लहरों से भरा हुआ था।

उसे ज़ोरों की नींद आ रही थी। वह अम्मा के पास लौट आया।



"तो कितनी लहरें हैं समुद्र में?" अम्मा ने पूछा।

"इतनी कि मैं गिन भी नहीं सकता," नन्हा उल्लू आँखें मिचमिचाते हुए बोला।

अगली रात नन्हे उल्लू ने अपनी अम्मा से पूछा, "समुद्र कितना गहरा है?"

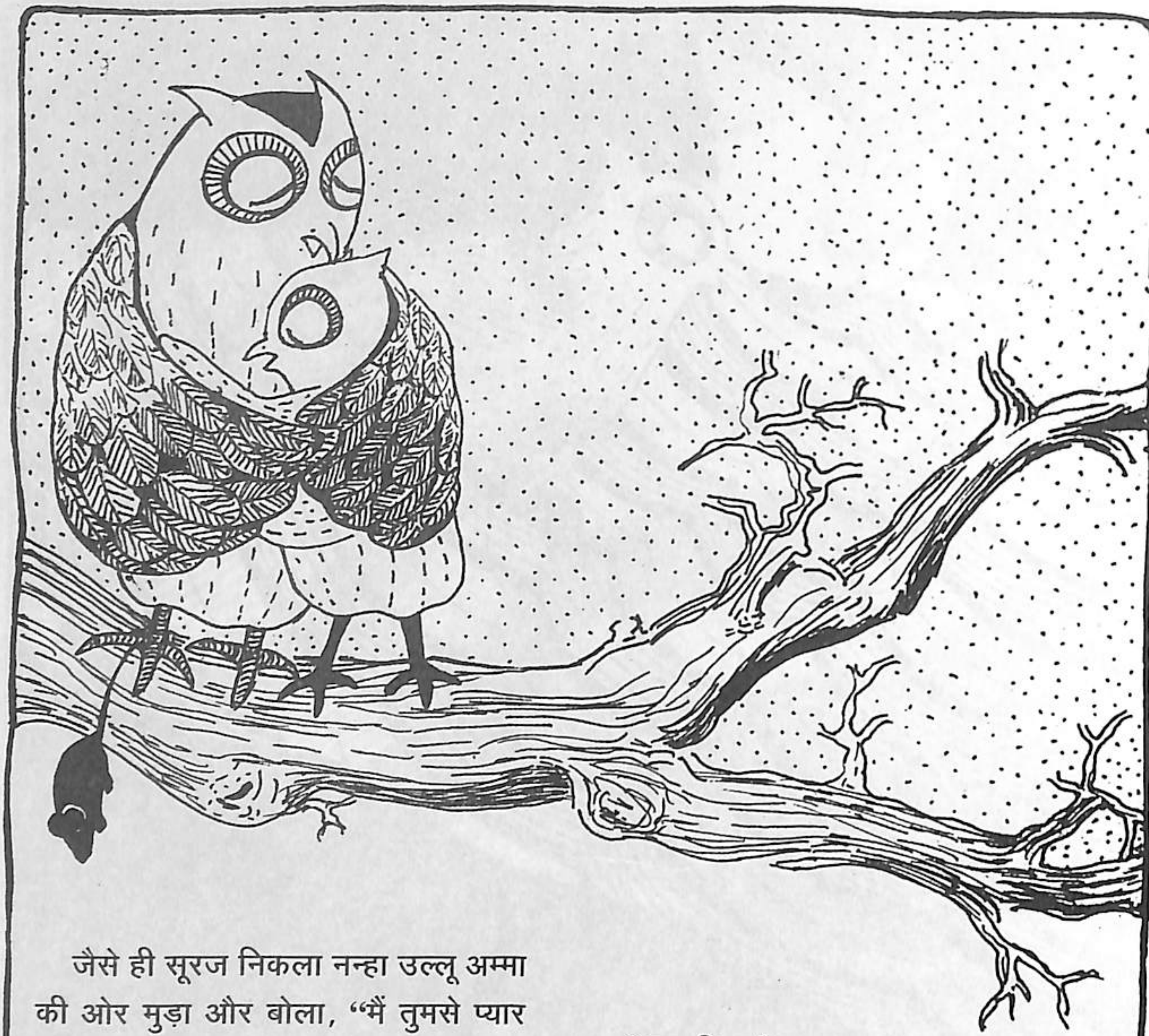
"बहुत गहरा," अम्मा बोली।

"कितना गहरा," नन्हे उल्लू ने पूछा।

अम्मा आसमान की ओर देखने लगी।

"लगभग उतना ही गहरा है जितना ऊँचा आसमान है" वह बोली।

नन्हा उल्लू ऊपर देखने लगा। वह पूरी रात पेड़ पर बैठा रहा। आसमान और सितारों के बारे में सोचता रहा। समुद्र और लहरों के बारे में सोचता रहा। जो भी उसने अम्मा से सीखा था, उसके बारे में सोचता रहा।



जैसे ही सूरज निकला नन्हा उल्लू अम्मा की ओर मुड़ा और बोला, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ, अम्मा।"

"कितना?" अम्मा ने पूछा।

"बहुत," नन्हा उल्लू बोला।

नन्हे उल्लू ने एक पल सोचा और अम्मा के गले लग गया।

"आसमान जितना ऊँचा है और समुद्र जितना गहरा, मैं तुमसे इतना प्यार करता हूँ, अम्मा।"

अम्मा ने अपने पंखों से अपने नन्हे उल्लू को ढाँप लिया।

"तुम कितनी बार गले लगाओगी मुझे?" नन्हे उल्लू ने अम्मा से पूछा।

"बहुत बार।" अम्मा ने उसे फिर गले से लगा लिया।

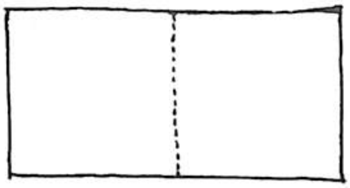
"कितनी बार?" नन्हे उल्लू ने ऊँघते हुए पूछा।

"जितनी लहरें हैं समुद्र में, जितने आसमान में तारे हैं, उतनी बार।" ●

कहानी - माइक थेलर
रूपांतरण - तेजी ग्रोवर
चित्र - विप्लव शशि

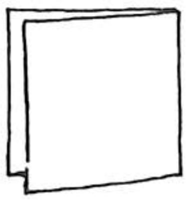
तुम भी बनाओ

पी..SSS

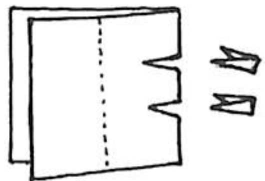




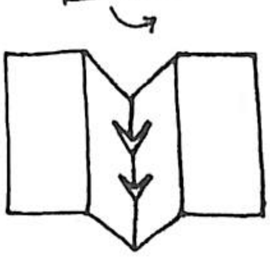
कागज़ का एक आयत बनाओ।



उसे बीच से मोड़ दो।



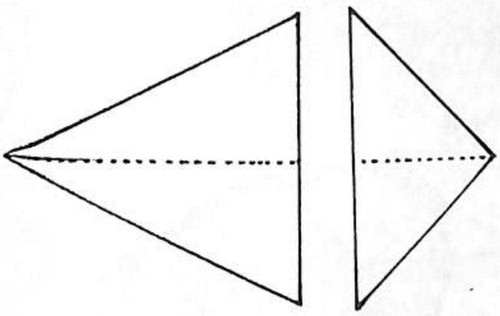
थोड़ी-थोड़ी दूर पर काटकर खाँचे बना लो।



इस कागज़ को दोनों ओर से चित्र में बताए तरीके अनुसार मोड़ लो।

ऊपर बताए तरीके से कागज़ को उँगलियों के बीच रखो और फूँक मारो। पी..SSS की आवाज़ निकलेगी।

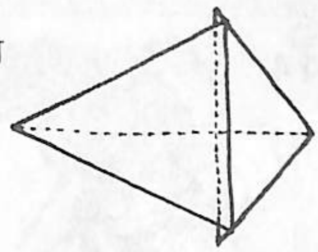
फटाक



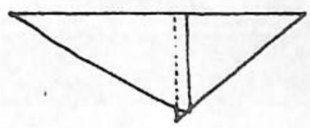
कागज़ के दो त्रिभुज काटो। बड़े त्रिभुज का कागज़ थोड़ा मोटा हो।

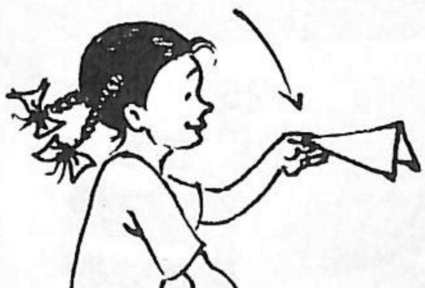
गोंद से दोनों को जोड़ दो।

आधे से मोड़ दो।

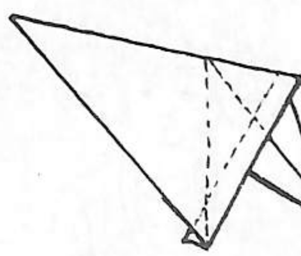


छोटा त्रिभुज अन्दर की ओर मोड़ लो।





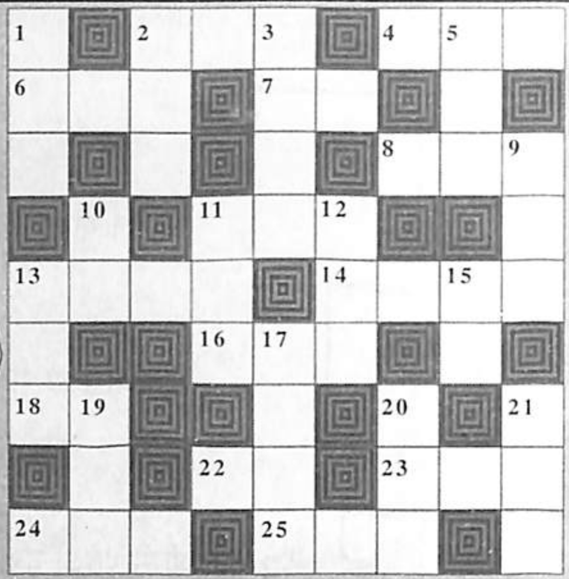
बड़े त्रिभुज की निचली नोंक को पकड़ो। हाथ को कुछ ऊपर उठाओ। और झटके से इसे नीचे की ओर लाओ। छोटा त्रिभुज फटाक की आवाज़ करता बाहर निकलेगा।



चित्र- विवेक वर्मा

संकेत बाएँ से दाएँ

चित्र-पहेली



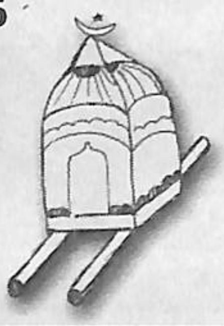
2



4



6



7



8



13



11 'नर बया' में है कथन, टिप्पणी

14



16

'खरब' की उलटफेर में
है 'समाचार'

18

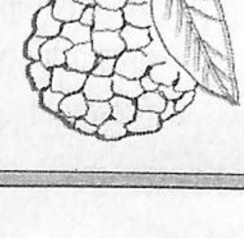


22 मुर्गा सुबह देता है

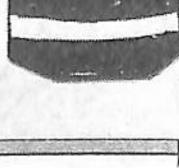
23



24



25

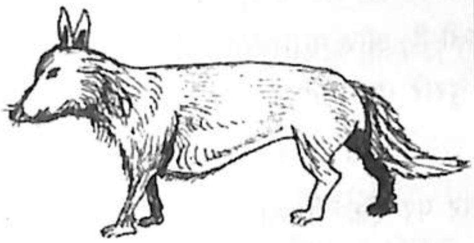


संकेत ऊपर से नीचे

1



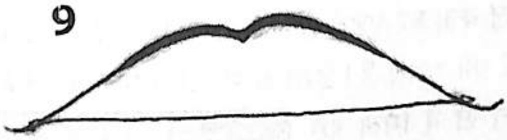
2



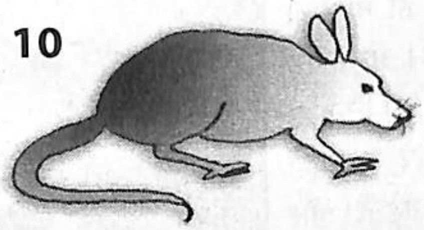
3



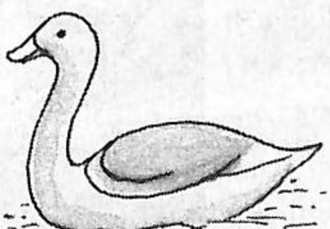
9



10



11

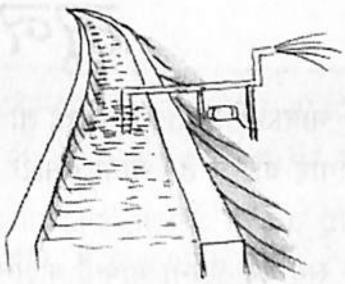


5 खाने के लिए पत्तों से बनी थाली

15 साल का तीसरा महीना

21 चंद्रगुप्त के कथित गुरु

12



13



17



19



20



चित्र- संतोष श्रीवास्तव

सुनो... सुना क्या?

भाषाओं के बारे में सोचो तो लगता है कि हम और हमारे साथ इस दुनिया में रह रहे लोग तरह-तरह की भाषाएँ बोलते हैं। यानी हमारी दुनिया में हज़ारों तरह की भाषाएँ बोली जाती हैं। कोई हिन्दी बोलता है तो कोई उर्दू या अँग्रेज़ी, कोई मालवी बोलता है तो कोई कोरकू....।

सब को अपनी भाषाएँ बोलना सीखना पड़ता है। यह आसान काम नहीं होता। और अगर कोई ऐसी भाषा सीखनी हो जो तुम्हारे घर में नहीं बोली जाती तो यह काम थोड़ा और मुश्किल हो जाता है। वैसे अन्य जीव हमारी तरह भाषा नहीं जानते। हाँ, पर वे विभिन्न तरीकों से अपनी बात अपने साथियों तक पहुँचा सकते हैं। इस काम के लिए वे कभी विभिन्न ध्वनियाँ या आवाज़ें करते हैं, तो कभी- कभी गंध, स्पर्श आदि का इस्तेमाल करते हैं। तुम्हें शायद हैरत हो कि व्हेल गाना गाती है, और मधुमक्खी डांस करती है। यहाँ कुछ जीवों के उन तरीकों के बारे में जानेंगे, जो वे अपनी बात दूसरे तक पहुँचाने के लिए अपनाते हैं।



खुशबू के संकेत

यह नर पतिंगा है। इसके सर पर एक पंखदार एंटीना लगा है। ये इसी के सहारे मादा पतिंगा से संकेत प्राप्त करते हैं। ये एंटीना इतने संवेदनशील होते हैं कि लम्बी दूरियों तक से संकेत प्राप्त कर सकते हैं। ये संकेतक अपने साथी द्वारा छोड़ी गई गंध को पहचान लेते हैं। केकड़े, मकड़ी तथा कई तरह के कीट इस तरह अपने साथियों तक संदेश पहुँचाते हैं। कभी-कभी इसी एंटीना का उपयोग मादा अपने साथी को आकर्षित करने के लिए करती है।

हाथी बहुत ही आहिस्ता से आवाज़ निकालते हैं। इस आवाज़ की आवृत्ति इतनी कम होती है कि हम उसे नहीं सुन पाते हैं। पर उनका साथी अपने साथी का संदेश समझ जाता है।



नाच की भाषा



मधुमक्खियों के पास नाच की भाषा होती है। ये नाचकर एक दूसरे को बताती हैं कि छत्ते से कितनी दूर किस दिशा में भोजन मिलेगा। कहते हैं कि मधुमक्खियाँ इस तरह की कई भाषाएँ जानती हैं।

चुम्मी से पहचान...

प्रेयरी के मैदानों में ये कुत्ते पाए जाते हैं। ये खरगोश बराबर होते होंगे। झुण्ड में रहने वाले ये जीव ज़मीन के अंदर बिल बनाकर रहते हैं। जब कभी दो कुत्ते मिलते हैं एक दूसरे को चूमते हैं। इसी चुम्मी से वे पता करते हैं कि जिस कुत्ते से वे मिल रहे हैं वह उनकी ही मण्डली का है या नहीं। अगर वह कोई जानने वाला निकला तो वे एक दूसरे के बालों को सहलाने लगते हैं। और अगर वह अजनबी निकला तो फिर उसकी खैर नहीं। फिर होती है लड़ाई। यह लड़ाई उस अजनबी के वहाँ से भागने पर ही खत्म होती है।





आवाज़ दे कहाँ है

गला फाड़कर चिल्लाना भी तो संदेश भेजने का तरीका हो सकता है। खासकर तब जबकि आप पेड़-पौधों से घिरी जगह में रह रहे हों। परिंदों के झुण्ड शाखों के बीच से निकलते वक्त अक्सर तेज़ कलरव करते हैं। इस कलरव से वे अपने साथियों को उड़ने के लिए आगाह कर रहे होते हैं, ताकि कोई साथी पीछे छूट न जाए। कीड़े और मेंढक भी संदेश पहुँचाने के लिए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हैं।

आका ताका, पूँछ पताका

समूह या झुण्ड में रहने वाले जानवर अकसर संकेतों का उपयोग करते हैं। शरीर का पुट्ठा और निचला हिस्सा या फिर सफेद पट्टी वाली पूँछ भी कभी एक अच्छा संकेतक हो सकती है।
खरगोश और हिरण प्रजाति के जानवर सफेद रंग का उपयोग करते है। जैसे ही इन्हें किसी खतरे का अंदेशा होता है ये झट से अपनी पूँछ खड़ी कर देते हैं।
एक अफ्रीकन सुअर अपनी पूँछ सीधी खड़ी करके भागता है जब उसे खतरे का अंदेशा होता है। इससे उसके झुण्ड के अन्य साथियों को खतरे का पता चल जाता है।
लेमर जो मेडगास्कर के निवासी हैं, चरते समय अपनी पूँछ को खड़ी रखते हैं। इससे वे हमेशा एक दूसरे की निगाह में रहते हैं।

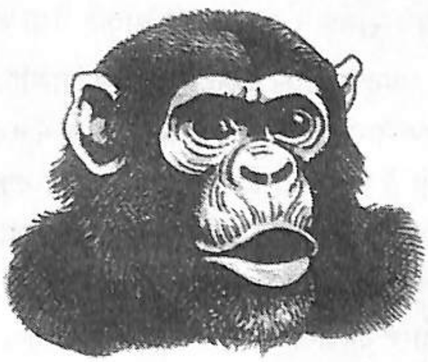
गायक मछली

व्हेल और डॉल्फिन कई तरह की आवाज़ें करती हैं। इनमें से कुछ तो उनके तफरीह के काम आती हैं। कुछ उनके संदेश भेजने के काम आती हैं। अलग-अलग व्हेल अलग-अलग तरह से गाने गुनगुनाती हैं। एक व्हेल का गीत यानी संदेश सिर्फ उसकी बिरादरी की व्हेल ही समझ पाती है। तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य होगा कि ये गाने कई किलोमीटर दूर टहल रही व्हेल सुन लेती है।

चिम्पैंजी भी अपनी भावनाएँ दिखाने के लिए तरह-तरह से मुँह बनाते हैं। जैसे इन तीन तस्वीरों में चिम्पैंजी तीन अलग तरह के मूड में है। क्या तुम पहचान पाए कि कौन-सी तस्वीर में चिम्पैंजी रोमांच, खुशी और कौन-सी में डर महसूस कर रहा है?







इकबाल

एक मज़ेदार फिल्म



बहुत कम लोग ऐसे होंगे जिन्होंने कोई फिल्म न देखी हो। सिनेमा की अपनी दुनिया है- अलग और रंग-बिरंगी। कभी परियों की तो कभी हमारे आस-पास की, तो कभी दोनों की, मिली-जुली भी।

कुछ फिल्में ऐसी होती हैं जिनकी कहानी या पात्र हमारे आसपास दिखाई देते हैं। कुछ फिल्में हमें जोश से भर देती हैं। ऐसी ही एक फिल्म है **इकबाल**।

एक फिल्म जो हम बहुत सारे साथीदारों ने मिल कर देखी। उस पर सोचा, बातें की, लिखा। उसे अपनी ज़िन्दगी से, समाज से जोड़कर देखा। एक फिल्म जिसने हमारे मन को जी भर कुरेदा। फिल्म ज्यों-ज्यों हममें घुलती गई। हमारे मन की बहुत-सी परतें खुलती गईं। जब हमने मिलकर अपनी-अपनी लिखी इबारतों को देखा-समझा तो लगा, इकबाल अनूठा भी है और हम जैसा भी है। जैसे हम सब में बहुत-सी चीजें मिलती-जुलती भी हैं और हममें से हरेक अपने-आप में अनूठा भी है। 'इकबाल' फिल्म देखने-समझने का हमारा सफर क्या था, पेश है।

अंकुर बाल-क्लब के हम साथीदारों का कहीं बाहर जाना, कुछ देखना, अपने आप में बड़ा उत्साहवर्धक होता है। जब दो दिन पहले दीदी ने कहा कि हम सब फिल्म देखने चलेंगे तो हमने बहुत सारी बातें पूछ-पूछ कर उन्हें परेशान कर दिया। डर भी था कि कहीं प्रोग्राम केंसिल न हो जाए। सिनेमा-हॉल में फिल्म देखने का मज़ा ही कुछ और है। कुछ लोगों के लिए तो फिल्म देखने का यह पहला अनुभव था। ये भी मालूम हुआ कि हम सिर्फ मज़े के लिए नहीं जा रहे हैं। बल्कि फिल्म देखने के बाद उस पर बातचीत भी करेंगे। बड़े इंतजार के बाद सिनेमा हॉल जाने का दिन आया था। कुछ लोगों के मन में डर था क्रिकेट की फिल्म है, कहीं बोर न हो जाएँ। पर जब अंदर घुसे और कई विज्ञापन के बाद फिल्म शुरू हुई तो जैसे-जैसे फिल्म आगे बढ़ती गई हम उसमें मशगूल होते गए।

फिल्म में गाँव के एक ऐसे गरीब लड़के की कहानी है, जो गूँगा-बहरा है। वह क्रिकेटर बनना चाहता है। स्कूल से उसे निकाल दिया जाता है। पिता उसे किसान बनाना चाहते हैं। कभी उनका गुस्सा ऐसे उतरता है - 'काम का न काज का दुश्मन अनाज का।' वह रोज़ अपनी भैंसों को सैर पर ले जाता है। उसने उन्हें क्रिकेट-खिलाड़ियों के नाम दे रखे हैं। वहीं जब मुंबई की टीम प्रैक्टिस करती तो वह छुप-छुप कर उनको देखता। उसे खुद पढ़ना-लिखना नहीं आता है। पर उसकी छोटी बहन खदीजा अँग्रेज़ी भी जानती है। और हाँ, इशारों की भाषा भी। वह अकसर उसे समझाती है कि टीम में कौन-क्या कह रहा है।

इकबाल बहुत अच्छी बॉल कर सकता है। वह अपनी भैंसों के सामने बॉलिंग का अभ्यास करता रहता है। खदीजा ने मुंबई टीम के कोच से कहा कि उसका भाई बहुत अच्छी बॉलिंग करता है। कोच हैरान हो गया कि यह गूँगा-बहरा कैसे इतनी अच्छी बॉलिंग डाल सकता है।

उसकी बॉलिंग देख कर कोच ने उसे मौका दिया। शुरू में उसकी सभी गेंदों को बल्लेबाज़ ने हवा में उड़ा दिया। लेकिन दूसरे दिन उसकी बहन ने इशारों की भाषा में उसे समझाया कि 'समझो कि ये सारे खिलाड़ी तुम्हारी भैंसें हैं।' फिर क्या था इकबाल ने दे दनादन ऐसी गेंदें फेंकी कि बल्लेबाजों के छक्के छूटने लगे।

घर में मम्मी को पता था कि वह रोज प्रैक्टिस करता है, पर पिता को नहीं। पिता के खेत से वापिस आने से पहले ही वह क्रिकेट की प्रैक्टिस करके घर आ जाता। वह फिर क्रिकेट-एकेडमी, जहाँ क्रिकेट की ट्रैनिंग दी जाती थी, जाने लगा। उसकी मम्मी ने पापा से छुपाकर उसे सफेद कपड़े दिए पहनने को। पर एक दिन ऐसा हुआ कि लगा इकबाल का सपना टूट रहा है। एकेडमी में एक और अच्छी बॉलिंग करने वाला लड़का था - कमल, जिसके पिता अमीर थे और उनकी ऊपर तक पहुँच थी। उन्होंने इकबाल को टीम से निकलवा दिया। उस दिन इकबाल, उसकी मम्मी और बहन खूब रोए। इकबाल ने बड़े शौक से नामी क्रिकेटरों की तस्वीरें एक झोंपड़े में छुपा कर रखी थीं। गुस्से में आकर वह उन्हें जलाने लगा। तभी उसे एक फोटो दिखी, एक ऐसे आदमी की जो उसी के गाँव में रहता था - यह क्या! ये तो अपने मोहित जी मास्टर हैं। ये भी अपने ज़माने में क्या नामी क्रिकेटर थे? इकबाल को लगा कि 'मेरा सपना अब शायद पूरा हो जाएगा।'

मोहित जी शराब के नशे में पड़े रहते थे। इकबाल उनके बार-बार मना करने पर भी उनके पीछे पड़ा रहा कि वे उसे बॉलिंग सिखा दें। उसी ने जब वो बीमार पड़े तो उन्हें अस्पताल पहुँचाया और अपनी बहन की मदद से सिखाने के लिए उन्हें राजी भी कर लिया। मोहित जी उसे रात-रात भर ट्रेनिंग देने लगे। और जल्दी ही वह अव्वल दर्जे का बॉलर बन गया। धीरे-धीरे वह आंध्र प्रदेश की टीम, फिर भारतवर्ष की टीम में भी शामिल हो गया। पूरी दुनिया में उसका नाम



फैल गया। उसके पिता, जो उसके खेलने से इतना नफरत करते थे उसके सपनों को कैद कर के रखते थे, अब वो भी खुश हो गए। मोहितजी ने उन्हें भी मना लिया। इकबाल की लगन और मेहनत, तमाम मुश्किलों के बावजूद, आखिर रंग ले आई।

इस फिल्म को देखकर हम सबको खूब अच्छा लगा। वापिस आकर अपने क्लब में बैठकर हमने इसके ऊपर बहुत सारी बातें कीं। सारी बातें कुछ सवालों के इर्द-गिर्द थीं। इन्हें हमने लिखा। सवाल थेः

- इकबाल की जिंदगी और मेरी जिंदगी कहाँ-कहाँ मिलती है?
- स्कूल हमारे सपने पूरा करता है या नहीं?
- इकबाल ने अपना सपना कैसे पूरा किया?
- क्या मेरा भी कोई सपना है?
- उसके लिए मैं क्या-क्या करती/करता हूँ।
- इकबाल ने क्या खास काम किया?
- कौन-सा सीन सबसे अच्छा लगा?

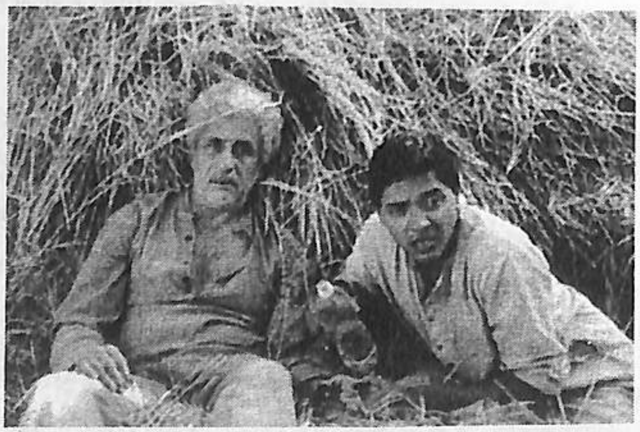
फिल्म की शुरूआत ही इतनी अच्छी थी - गाँव के सारे लोग मैच देख रहे थे, दीवाने होकर। इनमें इकबाल की मम्मी भी शामिल है। लोग ऐसे नाच रहे हैं जैसे शादियों में नाचते हैं। इकबाल के मैच में उसकी माँ ही क्यों, गाँव वाले भी नाचने लगते थे, वैसे ही जैसे आमतौर पर इंडिया टीम के जीतने पर सभी

लोग खुश हो जाते हैं। हमारी बस्ती में अगर बिजली गुल हो जाती है तो हम सब झुण्ड बना कर दुकान पर खड़े-खड़े मैच देखते हैं और घर जाना भूल जाते हैं।



हममें से कई साथीदारों को वो सीन नहीं भूलता, जब इकबाल के पापा गुस्से में आकर उसके जूतों को आग में फेंक देते हैं। हमारी आँखों में आँसू रोके नहीं रुक रहे थे। बार-बार ये सवाल आ रहा था, अरे! इसके पास तो पैसे भी नहीं हैं, ये नए जूते कैसे लेगा? हमें इकबाल पर तरस आ रहा था और उसके पिता पर गुस्सा। क्रिकेट का सामान खरीदने के लिए कितनी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है हम जानते हैं। साल-दर-साल हमें टाला जाता है। बड़ी मुश्किल से कभी रो-रो कर 100 रुपये मिलते हैं किट खरीदने के लिए। एक साथी को बहुत ज़िद और हो हल्ला के बाद 2000/- रु. मिले किट खरीदने के लिए। वो बहुत खुश, नेहरू स्टेडियम में ट्रेनिंग के लिए नाम भी लिखवा लिया। "5 खिलाड़ी सिलेक्ट हुए। उनमें मेरा नाम नहीं था। मैंने भी सौरभ, सानिया की तस्वीरों की एल्बम फाड़ दी। पूरी रात रो-रोकर सोया। फिर मन को समझाया - मेरे पास मौके हैं, किट है। पहले पढ़ाई कर लूँ।"

बच्चों को निर्णय लेने का कोई हक नहीं होता। बड़े समझते हैं कि मेरा बच्चा कुछ नहीं जानता। इकबाल की मम्मी और बहन भी निर्णय नहीं लेतीं। ऐसे ही हमारे घर में पिता जी ही सब निर्णय लेते हैं। चाहे वो सही हो या गलत। और हम सब कठपुतलियों की तरह उन्हें निभाते हैं। हम नौकरों की तरह पिता का



हुक्म बजाते रहते हैं, सुनते रहते हैं - 'हमने दुनिया देखी है।' इकबाल को अपने पिता से छुप-छुप कर बॉलिंग करनी पड़ती थी। जब उसके पापा घर आने वाले होते थे और जैसे-जैसे घर के पास पहुँचने वाले होते थे तब इकबाल डर के मारे क्रिकेट छोड काम पर लग जाता था। हॉल में बैठ हम लोगों के मुँह से निकलता "हे भगवान! अभी न आएँ, वरना बेचारा इकबाल तो गया।" इकबाल को उसके पिता बिल्कुल नहीं समझते थे। उन्हें उस पर भरोसा नहीं था। बड़े लोग हम पर भरोसा क्यों नहीं करते? जिस तरह माँ बाप अपने लिए निर्णय लेते हैं वैसे ही इकबाल खुद अपना निर्णय क्यों नहीं ले सकता था? हर बच्चे को अपने निर्णय लेने का पूरा हक है।

कई माताओं की तरह इकबाल की माँ भी उसके साथ थीं। जब मैच होता तो वो भी शोर-शराबे में शामिल हो जाती थीं। माएँ अपने पतियों से डरती हैं, वो खुल कर अपने मन की नहीं कर पातीं। हमारी मम्मी हमारी 'गल्तियों' पर परदा डाल देती हैं। एक मोहित जी थे जो उसे समझते थे। इकबाल के पिता तो उसे समझना ही नहीं चाहते थे। इस फिल्म में यह भी देखा कि बच्चे बड़ों को सुधार सकते हैं। मोहित जी दिन-रात शराब में डूबे रहते थे। रोज़-रोज़ उन्हें क्रिकेट की याद दिला कर, प्यार से, अपने अरमानों के लिए वह उन्हें होश में ले आया। वह उनके पीछे ऐसे पड़ा जैसे बॉल के पीछे बल्ला। मोहित जी ने सारी बोतलें तोड़ दीं। इकबाल ने उन्हें नई ज़िन्दगी दी। बच्चे नादान नहीं होते, बड़ों से दो कदम आगे ही होते हैं।

हमारे भी कई शौक हैं। एक साथी अपने बाल कटवाना चाहती है। 'मैं वो क्यों नहीं कर पाती जो चाहती हूँ। मुझे बहुत खुन्दक आती है। पापा क्यों अपनी सोच मुझ पर थोपते हैं। सोचती हूँ मैं भी किसी की न सुनूँ और अपना सपना पूरा करूँ।' अपने शौक पूरे करने के चक्कर में हम भी डाँट-मार खाते हैं - इकबाल की तरह। हम रोने को मजबूर हो जाते है, जी करता है घर छोड़ कर चले जाएँ। एक दोस्त 3-4 दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलता रहता है। यदि बॉल टूट जाए तो डाँट-मार झेलनी ही पड़ती है। एक तो खेलते नहीं दिया जाता उस पर सुनने को मिलता है - 'तू क्रिकेटर नहीं बन सकता। तेरी उम्र (15 साल) में सचिन क्रिकेटर बन चुका था।' तो हमें ढंग से खेलने कब दिया जाता है। फिल्म देखकर तो बॉलिंग की लगन और जाग गई है।



हममें से कोई गायक बनना चाहता है। पर स्कूल से कुछ मिलता नहीं। हमारा एक साथी रोज अपने से रियाज करता है, अकेले गुनगुनाता रहता है, ए. आर. रहमान के गाने सुनता है, ऑरगन बजाता है। हममें से कुछ साथी अपने सपने, अपने शौक के लिए झूठ भी बोल लेते हैं। जैसे पापा क्रिकेट से चिढ़ते हैं तो उन्हें बगैर बताए प्रैक्टिस करना। हमारे और भी सपने हैं - हम डॉक्टर बनें, सिंगर बनें, इंजीनियर बनें या पुलिस इंस्पेक्टर बनें। ड्रेस-डिजाइनर बनने के लिए न घर में सहूलियत है न स्कूल में सुविधा। 'मैं चुपचाप नकल करके या खुद से डिजाइन बनाकर सिलती हूँ, चाहे उस चक्कर में बहन की डाँट भी सुननी पड़े।' लड़कों के लिए और मुश्किल है। गाओ तो छुप-छुप के, बजाओ तो छुप-छुप के। 'जब पहली बार तबला छुआ तो बहुत खुशी मिली, वैसी ही जैसी इकबाल को मिली अच्छी बॉलिंग करने पर।" अक्सर लड़कियों को पुलिस में जाने नहीं देते। पापा डाँटते हैं 'कोई जरूरत नहीं'।

स्कूल में ऐसा कुछ पढ़ाया नहीं जाता जिससे हम अपने सपने पूरे कर सकें। वैसे भी स्कूल सिवाय एक सर्टिफिकेट के देता ही क्या है। स्कूल बस किताबी ज्ञान देता है। कैसे पूरा करें हम अपने शौक? बड़े कहते हैं कि अगर पढ़-लिख लोगे तो अपनी मंजिल दिख जाएगी। पर क्या सिर्फ पढ़ने-लिखने से हमारे शौक पूरे हो जाएँगे? इकबाल ने स्कूल छोड़ कर अपना सपना पूरा किया। लेकिन हमें तो पढ़ना है। इसलिए सपना पूरा करने में समय लगेगा। अगर पढ़ने की ज़रूरत नहीं होती तो हम भी अच्छे बॉलर बन सकते थे। इकबाल को स्कूल नहीं जाना पड़ता था, इसलिए वह इतना अच्छा क्रिकेटर बना। हाँ अगर डॉक्टर या टीचर बनना है तो पहले स्कूल की पढ़ाई करनी पड़ेगी। साधारण ज्ञान स्कूलों में बढ़ता है। पर खेलने की सुविधा बहुत कम हैं। अक्सर हम किसी चीज़ में आगे होते हैं पर टीचर हमें पीछे छोड़ने की कोशिश करते हैं। फिर जिसमें कुछ खास चीज़ होती है उसे खरीदने की कोशिश की जाती है जैसे इकबाल के लिए की गई थी। इकबाल ने मोहित जी की बात को याद रखा, खेल में जुटा रहा, पैसे पर ध्यान नहीं दिया। उसने रिश्वत की चैक फाड़ दी। तभी गुरु भी उसे देखते ही रह गए। ऐसे गुरु जल्दी मिलते नहीं जो बच्चों के मन की बातों को समझने की कोशिश करें। ●

इस चर्चा में अंकुर दक्षिणपुरी बाल क्लब के इन बच्चों ने भाग लिया - विकास राणा, भारती, टीना, निशा, सपना काजन, राजा, भारती, अर्जुन एस, टीना, निशा पोसवाल, मनीषा, अंकित, धर्मेन्दर सिंह, कोमल, दीपिका, अजित और शशि चौहान।

डॉ. शांतिस्वरूप भटनागर



भारत के महान वैज्ञानिकों में डॉ. शान्तिस्वरूप भटनागर भी एक हैं। यह उन्हीं की लगन, तपस्या और दूरदृष्टि का परिणाम है कि आज भारत की गिनती उन कुछ देशों में होती है जो विज्ञान की कर्मठ प्रतिभाएँ और काम में जुटे रहनेवाले अनुसंधानकर्ता पैदा करता है।

डॉ. शान्तिस्वरूप भटनागर को अंग्रेज़ सरकार ने 1936 में ओ.बी.ई. (ऑर्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर) और सन् 1941 में 'सर' का खिताब दिया था। वह ऐसे पहले भारतीय थे जिन्हें रॉयल सोसायटी का मानद फैलो बनाया गया था। वह भारत की वैज्ञानिक व अनुसंधान परिषद् (सी.एस.आई.आर.) के जन्मदाता और पहले निदेशक थे। उन्होंने ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन करवाया था और इसके पहले अध्यक्ष भी रहे थे। इतना ही नहीं, राष्ट्रीय अनुसंधान निगम और भारतीय मानक संस्था की स्थापना के पीछे भी उन्हीं की सूझ थी।

डॉ शान्तिस्वरूप भटनागर का जन्म 21 फरवरी, 1894 को वर्तमान पाकिस्तान में शाहपुर जिले के भेरा नामक कस्बे में हुआ था। उनके पिता का नाम बाबू परमेश्वरी सहाय और माता का नाम पार्वती था। उनके पिता भेरा के हाइस्कूल में अध्यापक थे।

डॉ. शान्तिस्वरूप भटनागर ने 1911 में लाहौर के दयालसिंह हाइस्कूल से प्रथम श्रेणी में दसवीं की परीक्षा पास की। 1916 में लाहौर के ही क्रिश्चियन कॉलेज से बी.एस.सी.किया और 1919 में पंजाब विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. की डिग्री प्राप्त की।

उनके अध्यापक रुचिराम साहनी की सिफारिश पर दयालसिंह ट्रस्ट ने उन्हें आगे पढ़ने के लिए अमेरीका भेजना मंजूर कर लिया। विश्वयुद्ध के कारण वह अमेरिका तो नहीं जा पाये लेकिन पानी के जहाज़ से लंदन ज़रूर पहुँच गए। सन् 1921 में उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय से डी.एस.सी. की डिग्री प्राप्त कर ली। वह चाहते तो वहीं अच्छी नौकरी कर लेते और ठाठ से रहते, लेकिन मदनमोहन मालवीय के कहने पर वह वापस भारत आ गए।

सन् 1924 में लाहौर में एक बड़ी रसायन प्रयोगशाला स्थापित हुई। डॉ. भटनागर को इसका निदेशक बनाया गया। यहाँ उन्होंने विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के लिए न सिर्फ भाषणमालाएँ आयोजित कीं बल्कि जनता के बीच जाकर विज्ञान के प्रयोग भी दिखाए। वह चाहते थे कि जनता अंधविश्वासों से मुक्त हो और एक आधुनिक भारत बनाने की सोचे।

इस दौरान उन्होंने पेट्रोलियम और मिट्टी के तेल की समस्याओं पर अनुसंधान किए। रेल के धुरों को ठण्डा रखने के लिए नयी चिकनाई का आविष्कार किया, रेल की काँसे की बियरिंगों के लिए नया तेल तैयार किया, मिठाइयाँ लपेटने के लिए जो कागज़ काम आता था, उस पर चढ़ाए जानेवाले पैराफिन मोम को गंधहीन बनाने की पद्धति खोजी, चुम्बकीय रसायन पर खोज की और इस विषय पर पहली पुस्तक लिखी जिसकी देश और विदेश में बहुत प्रशंसा हुई। उन्होंने डेढ़ सौ से भी अधिक शोधपत्र प्रकाशित किए और पच्चीस से भी अधिक पेटेण्ट करवायीं।

डॉ. भटनागर ने देश के पेट्रोलियम उद्योग की उन्नति में भी काफी योगदान दिया। उन्हीं के प्रयत्नों से तीन बड़ी कम्पनियाँ देश में अपने तेल शोधक कारखाने लगाने को तैयार हुईं।

डॉ. भटनागर बहुत काम करते थे। वे कभी थकते ही नहीं थे। सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। इसी वर्ष हृदयगति रुकने से उनका देहान्त हो गया।

डॉ. शान्तिस्वरूप भटनागर के सम्मान में हर साल प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों और अनुसंधानकर्ताओं को डॉ. शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार दिया जाता है। ●

कंजूस

सूरज मृदुल



किसी नगर में सिकू साह, सूँघू साह और देखू साह नाम के तीन कंजूस आदमी रहते थे। वे इतने कंजूस थे कि उन्हें देखकर दूसरों को शर्म आने लगती थी।

एक दिन सिकू साह एक किराने की दूकान पर घी लेने पहुँचे। अपनी बोतल दूकानदार को देते हुए सिकू साह बोले- "आज पन्द्रह साल बाद मेरा घी खत्म हो गया है। इस बोतल में एक किलो घी दे दो।"

यह सुनकर दूकानदार ने हैरानी से पूछा- "भला एक बोतल घी आप पन्द्रह साल कैसे चला लेते हैं?"

सिकू साह ने जवाब दिया, "जब भी मुझे रोटी खाना होती है मैं इस बोतल में एक सींक डालता हूँ और फिर उसे निकालकर रोटी पर लगा लेता हूँ। ऐसा करने से एक बोतल घी पन्द्रह साल चल जाता है।"

सूँघू साह भी वहीं खड़े थे। सिकू साह की बात सुनते ही वह बोल पड़े, "लेकिन मेरी बोतल का घी तो तीस साल से चल रहा है। अभी थोड़ा-सा ही खत्म हुआ है।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?" दूकानदार ने आश्चर्य से पूछा।

"बात यह है कि मैं जब रोटी खाता हूँ तो बोतल से ढक्कन हटाकर घी को सूँघ लेता हूँ। बस, मेरा काम हो जाता है। उस समय मुझे यही लगता है कि जैसे मैं घी से चुपड़ी रोटी खा रहा हूँ।" सूँघू साह ने बताया।

सूँघू साह की बात सुनकर दूकानदार और सीकू साह दोनों हैरान हो गए।

तभी देखू साह दूकान के पीछे से निकले। उन्होंने वहीं बैठे-बैठे सीकू साह और सूँघू साह की बात सुन ली थी।

देखू साह बोले- "भैया, मैं तुम लोगों की तरह अकलमंद तो नहीं हूँ पर मेरे पास जो घी की बोतल है वह मेरे दादाजी ने खरीदी थी, और आज तक खत्म नहीं हुई है।"

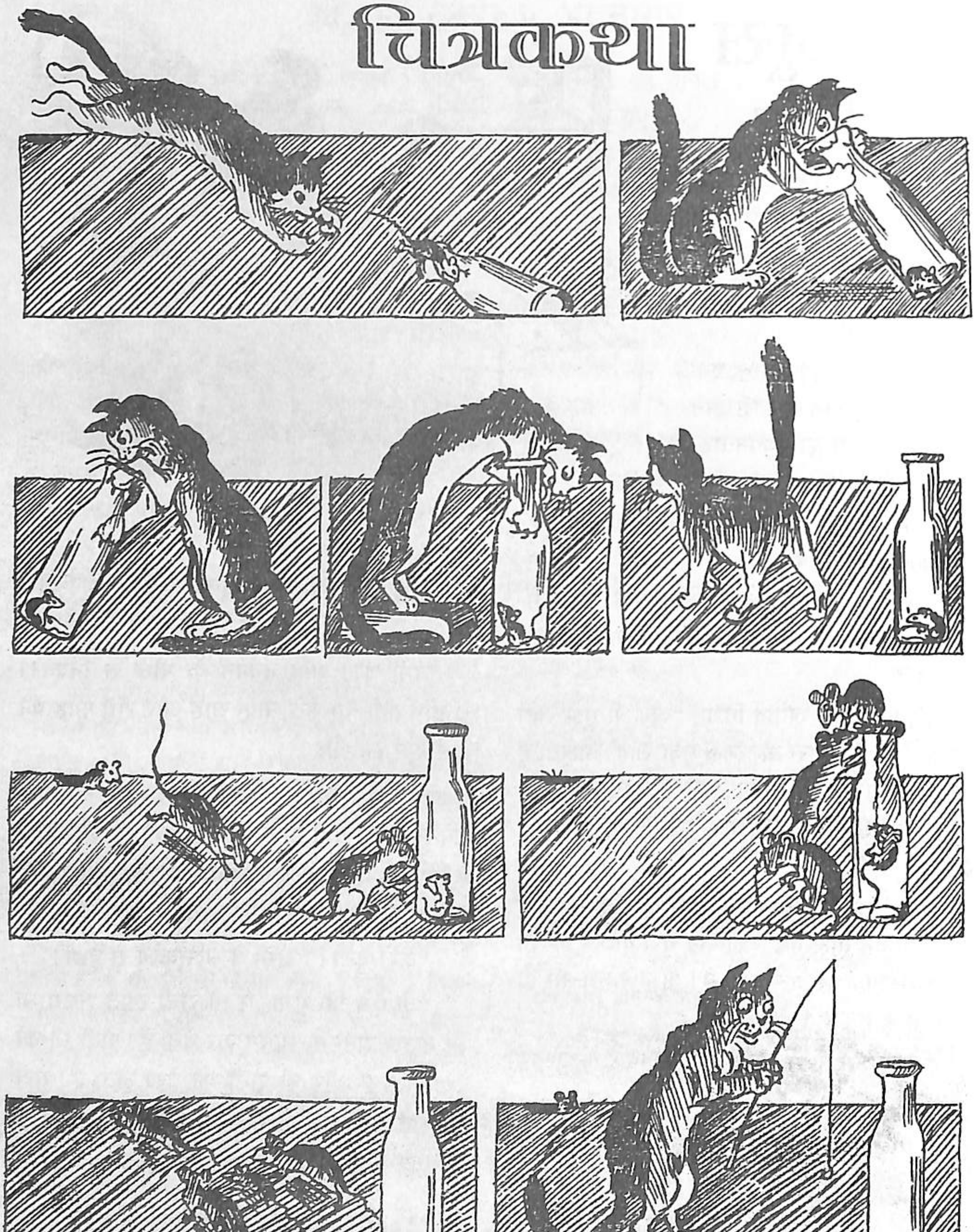
"कैसे-कैसे?" सभी ने उत्सुकता से पूछा।

"वो ऐसे कि भैया, मैं तो रोटी खाते समय घी की बोतल रोटी के सामने कर देता हूँ। रोटी घी को देख लेती है और घी रोटी को देख लेता है। मेरा तो काम बस इसी से चल जाता है।"

सब देखू साह की बुद्धि की तारीफ करने लगे।

जब सीकू साह, सूँघू साह और देखू साह चले गए तो दूकानदार बोला- सब इनके जैसे हो जाएँ तो मुझे तो दूकान बन्द ही कर देनी पड़े। ●

चित्रकथा



साभार - सचित्र कहानियाँ, रादुगा प्रकाशन, मास्को



पान की डलिया

तेजी ग्रोवर

पान की डलिया क्यों लटकी?
लटकी है तो लटकी है
तेरा इसमें जाता क्या
जाता तेरा छाता क्या?
छाता तेरा उड़ गया
उड़कर रस्ता मुड़ गया
मुड़ गया तो मुड़ गया
तेरा कौन-सा गुड़ गया
चला गया तो गया चला
तू भी अपने घर को जा।

चित्र- धीरन दास

एक जानवर ऐसा

यह कौन-सा जानवर है? शेर? या बाघ? शायद शेर! नहीं बाघ। दरअसल यह एक विचित्र जानवर है जो आधा शेर है आधा बाघ।

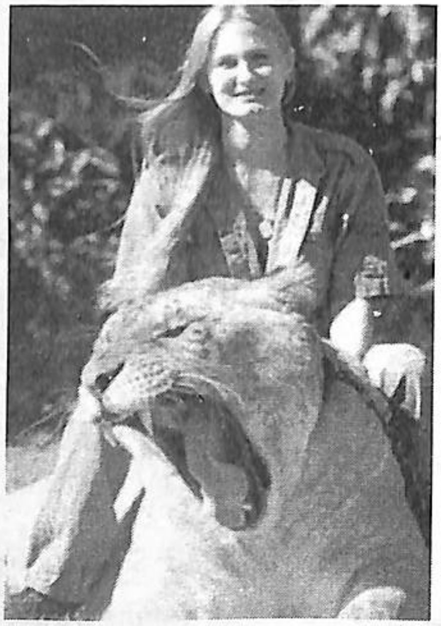
यह मियामी (अमेरिका) में अत्यंत संकटग्रस्त प्रजातियों की संस्था में रहता है।



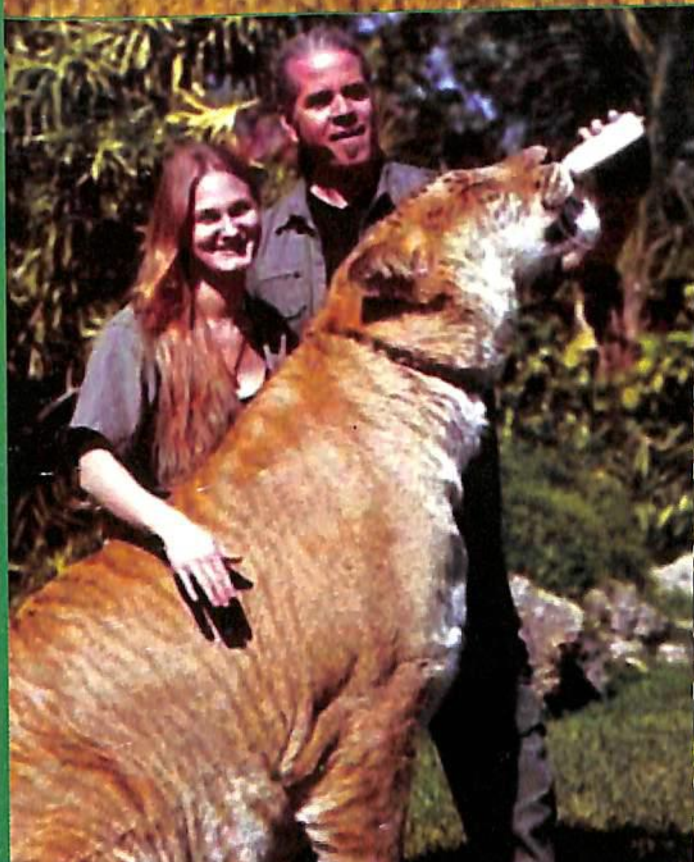
इसका पिता शेर था और माँ मादा बाघ। वैसे शेर और बाघ एक-दूसरे के दुश्मन माने जाते हैं, पर यहाँ दोनों में दोस्ती हो गयी और इसका मज़ेदार परिणाम हैं ये महाशय जिनकी कद काठी इतनी बढ़ गयी है कि इनके मम्मी-पापा अभी से इनके सामने बौने लगने लगे हैं।

इनकी लम्बाई है दस फीट और वज़न है 500 किलोग्राम, जबकि इनकी उम्र सिर्फ तीन साल है। अब सोचो, ये खाते क्या होंगे? वैसे तो इनके लिए 8 किलो मीट काफी होता है, पर मौज में आते हैं तो एक बार में बैठे-बैठे करीब 45 किलो मीट डकार जाते हैं। इन्हें तैरने का भी शौक है, जबकि कहते हैं शेरों को तैरना नहीं आता। लेकिन हाँ, इनकी दहाड़ बिल्कुल शेर जैसी है। इनका नाम रखा गया है - हर्क्यूलिस।

ऐसे पशुओं का होना एकदम अजूबा भी नहीं। पहले भी ऐसे विचित्र पशुओं के पाये जाने के समाचार मिलते रहे हैं। ए. एच. ब्रायडन नाम के लेखक ने अपनी एक पुस्तक में बताया है कि मई 1897 में भी ऐसा एक 'लाइमर' देखा गया था। अमेरिका के नेवेदा चिड़ियाघर में भी ऐसा ही एक जानवर था जिसका वज़न 450 किलोग्राम था। 1975 में दक्षिण केरोलिना के एक चिड़ियाघर में एक शेरनी ने तीन ऐसे बच्चों को जन्म दिया था जिनका शरीर शेर जैसा और चेहरे बाघ जैसे थे। लेकिन तीनों बच्चे मर गये। 2002 में जापान में भी एक ऐसा विचित्र जीव पैदा हुआ था। वह 100 दिन जिया। 2004 में चीन में हैनान के वन्यजीव उद्यान में भी एक ऐसे जीव ने जन्म लिया था। लेकिन वह सिर्फ 72 घण्टे बाद चल बसा। ऐसी और भी घटनाओं के समाचार मिलते रहे हैं।



लेकिन हर्क्यूलिस के तो क्या कहने! तो क्या हम उम्मीद करें कि वह जीवित रहे, वयस्क हो और हमें एक नये प्रकार के विशाल जानवर को देखने का अवसर प्राप्त हो। ●


शेघ उर्फ लाइगर



पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05



रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना